bjpkamaljyoti@gmail.com www.up.bjp.org

संवत 2079 युगाब्द 5124 कुल पृष्ठ –32 नवम्बर प्रथम अंक – 7

वर्तमान

कमल ज्योति

जल ही जीवन!

Estd. Since 1976
ivedanta Gurukula & International School
AND OPENING

वर्तमान कमल ज्योति

संरक्षक
श्री भूपेन्द्र सिंह
सम्पादक
अरुण कान्त त्रिपाठी
प्रबन्ध/कार्यकारी सम्पादक
राजकुमार
प्रकाशक
प्रो0 श्याम नन्दन सिंह
पृष्ठ संयोजक
ओम प्रकाश पंडित

कार्यालय

कमल ज्योति, 7–विधानसभा मार्ग
लखनऊ – 1
फोन :– 0522–2200187
फैक्स :– 0522–2612437

Email-
bjpkamaljyoti@gmail.com

पत्रिका में प्रकाशित आलेखों से सम्पादकीय सहमति अनिवार्य नहीं

मुद्रक

नूतन ऑफसेट मुद्रण केन्द्र,
राजेन्द्र नगर, लखनऊ–4

www.up.bjp.org
bjpkamaljyoti
bjpkamaljyoti
@bjpkamaljyoti

जय जगन्नाथ जी

एक देश, एक चुनाव!

भारतीय लोकतंत्र में चुनाव वर्शभर निरंतर होते ही रहते है। विशाल देश में लोकसभा ,विधानसभा, नगर निगम, ग्रामसभा आदि चुनाव जारी रहते है,राजनैतिक दलों में चुनाव प्रबंधन एक विभाग हो गया है जो निरंतर कार्य करते रहता है। राजनेताओ को विकास कार्यो को करने की बजाय अधिकांश समय चुनावी समीकरणों में लगाना पड़ता है । एक राजनेता कहते है कि भारतीय जनता पार्टी 24 घन्टे , सातो दिन,बारहो महीने चुनाव लड़ती है। जबकि देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र भाई मोदी ''एक देश एक चुनाव'' के बात करते हैं।

उल्लेखनीय है कि पिछले दिनों संसदीय समिति ने संसद के दोनों सदनों में पेश अपनी एक रिपोर्ट में कहा था कि अगर देश में एक ही बार में सभी प्रकार के चुनाव संपन्न किए जाएंगे, तो न केवल इससे सरकारी खजाने पर बोझ कम पड़ेगा, बल्कि राजनीतिक दलों का खर्च कम होने के साथ साथ मानव संसाधन का भी अधिकतम उपयोग किया जा सकेगा। साथ ही, मतदान के प्रति मतदाताओं की जो उदासीनता बढ़ रही है, वह भी कम हो सकेगी।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी भी कई बार कह चुके हैं कि एक देश एक चुनाव अब केवल चर्चा का विषय नहीं है, बल्कि यह भारत की सामयिक आवश्यकता भी है, क्योंकि देश में हर महीने कहीं न कहीं बड़े चुनाव हो रहे होते हैं। इससे विकास के कार्यों पर जो प्रभाव पड़ता है, उससे देश भली–भांति वाकिफ है। सर्वविदित है कि बार–बार चुनाव होने से प्रशासनिक काम पर भी असर पड़ता है। अगर देश में सभी चुनाव एक साथ होते हैं, तो राजनीतिक दल भी देश और राज्य के विकास कार्यों पर ज्यादा समय दे पाएंगे।

हालांकि एक देश एक चुनाव की बात कोई नई नहीं है, क्योंकि वर्ष 1952, 1957, 1962 और 1967 में लोकसभा और राज्य विधानसभा दोनों के चुनाव साथ–साथ हो चुके हैं। लेकिन वर्ष 1967 के बाद कई बार ऐसी घटनाएं सामने आई हैं, जिसमें लोकसभा और राज्य विधानसभा अलग–अलग समय पर भंग होती रही है। इसका एक बड़ा कारण कई राज्य विधानसभाओं में विश्वास मत प्राप्त नहीं होने के कारण समय से पहले सरकारों का भंग होना रहा है। साथ ही कई कारणों से सत्ता में रहे दलों का आपसी गठबंधन टूटने से भी कई राज्यों में सरकारें अपना कार्यकाल नहीं पूरा कर पाई हैं। कई बार तो ऐसी परिस्थितियों लोकसभा में भी आ चुकी है, जिस कारण केंद्र सरकार का कार्यकाल भी पांच वर्ष पूरा नहीं हो पाया। लेकिन आज एक भारत, श्रेश्ठ भारत के संकल्प को सिद्धि तक पहुंचाना है। आत्म निर्भर सशक्त भारत बनाना है। तो चुनाव आयोग, राजनैतिक दल एवं जनता को विचार कर चुनाव प्रक्रिया में सुधार समय की मांग है।

bjpkamaljyoti@gmail.com

जल ही जीवन 'मिशन'

योगी सरकार ने करीब पचास योजनाओं में कीर्तिमान बनाये हैं। उनमें जल जीवन से सम्बन्धित परियोजनाएं भी शामिल हैं। नमामि गंगे से प्रारंभ हुई यह यात्रा सिचाई और पेयजल जैसी योजनाओं तक विस्तारित हैं। इन सभी में उल्लेखनीय प्रगति हुई है। पूवह्न उत्तर प्रदेश में चालीस वर्षों तक जापानी बुखार का प्रकोप था। योगी सरकार ने इसका भी समाधान किया। पूरा बुंदेलखंड जल संकट से पीड़ित था। अब वहाँ जल जीवन मिशन योजना क्रियान्वित हो रही है। हर घर जल से नल का सपना साकार हो रहा है।

जल ही जीवन है, **"जल है तो कल है"** के शास्वत उद्घोष तले दुनिया सतत विकास को तलासती है। **"सतत विकास और समानता के लिए जल सुरक्षा"** पर संवाद विमर्श के लिए भारत में विद्वान इकट्ठा आये।

यह संयोग है कि राष्ट्रपति के रूप में द्रोपदी मुर्मू की पहली यूपी यात्रा जल जीवन से ही सम्बन्धित थी। राष्ट्रपति ने जनपद गौतमबुद्धनगर के इण्डिया एक्स्पो मार्ट, ग्रेटर नोएडा में सातवें भारत जल सप्ताह का उद्घाटन किया। योगी आदित्यनाथ के प्रयासों से इस क्षेत्र में व्यापक कार्य हुए हैं. जबकि पिछली सरकारों ने जल जीवन से सम्बन्धित समस्या के प्रति संवेदनशीलता नहीं दिखाई थी बसपा और सपा को तो क्रमशः पूर्ण बहुमत से सरकार बनाने व कार्यकाल पूरा करने का अवसर मिला था लेकिन इस समस्या का समाधान योगी सरकार के पांच वर्षों में संभव हुआ। इसका प्रमुख कारण था कि योगी आदित्यनाथ इस समस्या के प्रति सदैव संवेदनशील रहे है। सांसद के रूप में वह लोकसभा के साथ साथ तत्कालीन केंद्र व प्रदेश सरकारों के समय यह विषय उठाते रहे लेकिन इस पर ध्यान नहीं दिया गया। पूर्वी उत्तर प्रदेश में यह एकमात्र समस्या नहीं थी। कुछ वर्ष पहले तक पूर्वी उत्तर प्रदेश को पिछड़ा व बीमारू माना जाता था, जहां चिकित्सा, मूलभूत व ढांचागत सुविधाओं का अभाव था। योगी आदित्यनाथ सरकार ने इन समस्याओं के समाधान का कार्य प्रारंभ किया। नरेंद्र मोदी ने काशी में कहा था कि उन्हें मां गंगा ने बुलाया है। तभी से वह गंगा की निर्मल, अविरल बनाने का सपना देख रहे थे। काशी और हल्दिया को उन्होंने जल मार्ग से जोड़ने की बात कही थी। यह एक बड़ा सपना साकार हुआ। आजादी के बाद पहली बार जल परिवहन की शुरुआत हुई था। यह सौगात केवल काशी को ही नहीं है. पूरे पूर्वी उत्तर प्रदेश को इसका लाभ मिलेगा। इतना ही नहीं इसका फायदा पश्चिम बंगाल तक दिखाई देगा। जितना सामान लेकर यह पानी का पहला जहाज आया ,उतना समान लाने के लिए सोलह ट्रक लगते। इस प्रकार जल परिवहन एक प्रकार की क्रांति लाने वाला साबित होगा। यह कार्य आजादी के बाद से ही करना चाहिए था। लेकिन इस ओर ध्यान नहीं दिया गया। अब सौ से ज्यादा नेशनल जल मार्ग पर कार्य किया जा रहा है। बिहार , झारखंड, उत्तर प्रदेश, पश्चिम बंगाल, सभी जल मार्ग से जुड़ेंगे। इससे इस पूरे क्षेत्र में व्यापार और पर्यटन सभी को बढ़ावा मिलेगा। यह सब काशी की गरिमा के अनुरूप होगा। कालीन कार्पेट का भी यह इलाका हब बन रहा है। काशी ही नहीं, देश में परिवहन क्रांति नया अध्याय शुरू हुआ। नरेंद्र मोदी ने वाराणसी में गंगा के उस पार रामनगर में नव निर्मित बहुउद्देशीय टर्मिनल राष्ट्र को समर्पित किया था. प्रधानमंत्री ने कोलकाता से चले मालवाहक जलयान एमवी रबीन्द्रनाथ टैगोर की अगवानी भी की थी. आजादी के बाद यह पहला अवसर था, जब कोई जल मालवाहक इतना सामान लेकर इतनी दूरी तक आया था. नरेन्द्र मंदी ने जल परिवहन के विकास की असीम संभावनाओं को देखते हुए जो नीतिगत फैसले किये थे,उन्हें

जहाजरानी और जल संसाधन मंत्री नितिन गडकरी ने रिकॉर्ड समय में पूरा कराया। उत्तर प्रदेश में योगी आदित्यनाथ ने भी इस कार्य में उल्लेखनीय सहयोग दिया. वाराणसी का मल्टी मॉडल टर्मिनल परिवहन के क्षेत्र में गेम चेंजर साबित हो रहा है. जल मार्ग विकास परियोजना के तहत बने इस टर्मिनल को हल्दिया–वाराणसी के बीच राष्ट्रीय जलमार्ग एक पर विकसित किया जा रहा है। राष्ट्रपति ने कहा कि जल संरक्षण, पर्यावरण, कृषि और विकास से जुड़े मुद्दे न केवल भारत के लिए, बल्कि पूरे विश्व के लिए प्रासंगिक हैं। जल का मुद्दा राष्ट्रीय सुरक्षा से भी जुड़ा हुआ है, क्योंकि उपलब्ध मीठे पानी की विशाल मात्रा दो या दो से अधिक देशों के बीच फैली हुई है। इसलिए यह संयुक्त जल संसाधन एक ऐसा मुद्दा है, जिसमें अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग आवश्यक है। भारत सरकार ने वर्ष 2019 में जल जीवन मिशन की शुरुआत की थी, जिसका लक्ष्य वर्ष 2024 तक हर ग्रामीण घर में नल से जल पहुंचाना है। जल जीवन मिशन के प्रारम्भ के समय, देश में जहां केवल 3.23 करोड़ ग्रामीण घरों में नल से जल की आपूर्ति होती थी, वहीं अब करीब 10.43 करोड़ घरों में नल से जल की आपूर्ति हो रही है। इस मिशन से गांव के लोगों को स्वच्छ पानी पीने के लिए मिल रहा है, जिससे जल–जनित बीमारियों में उल्लेखनीय कमी आई है। नल से घर–घर जल की आपूर्ति ने पानी की बर्बादी को तो रोका ही है, साथ ही उसके दूषित होने की सम्भावना को भी कम किया है। हमारे देश में जल संसाधन का करीब अस्सी प्रतिशत भाग कृषि कार्यों में उपयोग किया जाता है। अतः सिंचाई में जल का समुचित उपयोग और प्रबन्धन जल संरक्षण के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण है। वर्ष 2015 में शुरू की गई 'प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना' इस क्षेत्र में एक बड़ी पहल है। देश में सिंचित क्षेत्र को बढ़ाने के लिए यह राष्ट्रव्यापी योजना लागू की जा रही है। जल संरक्षण लक्ष्यों के अनुरूप यह योजना 'पर ड्रॉप मोर क्रॉप' सुनिश्चित करने के लिए सटीक–सिंचाई और जल संरक्षण तकनीक को अपनाने की भी परिकल्पना करती है। सरकार ने जल संरक्षण और जल संसाधन प्रबन्धन को बढ़ावा देने के लिए 'जल शक्ति अभियान' शुरू किया है, जिसके अन्तर्गत पारम्परिक और अन्य जल निकायों का नवीनीकरण, बोरवेल का रीयूज और रीचार्ज, वॉटरशेड विकास और गहन वनरोपण द्वारा जल संरक्षण और वर्षा जल संचयन को बढ़ावा दिया जा रहा है। शहरीकरण के फलस्वरूप वॉटर मैनेजमेण्ट और वॉटर गवर्नेन्स सिस्टम की आवश्यकता होगी। इस सिस्टम से जल का समान और सतत वितरण तथा रीसाइकलिंग जैसे कार्य प्रभावी रूप से हो सकेंगे। राज्यपाल आनन्दी बेन पटेल ने कहा कि जल जीवन मिशन स्कीम के तहत अब तक सत्रह करोड़ से अधिक ग्रामीणों को लाभान्वित किया गया है, जिनमें तीन करोड़ से अधिक ग्रामीण परिवारों को जल का कनेक्शन प्रदान किया गया है। योगी आदित्यनाथ ने कहा कि पिछले साढ़े पांच वर्षों में प्रदेश के बुन्देलखण्ड क्षेत्र एवं विन्ध्य क्षेत्र में जल का बेहतर प्रबन्धन हुआ है। राज्य में हिमालय से आने वाली ज्यादातर नदियां सिल्ट लेकर प्रदेश में प्रवेश करती हैं। इनका चैनलाइजेशन नहीं होने से कुछ छोटी नदियां लुप्तप्राय हो गई थीं। प्रदेश सरकार ने कन्वर्जेन्स के माध्यम से निरन्तर प्रयास करते हुए साठ से अधिक नदियों को पुनर्जीवित करके उनमें जल प्रवाह सुनिश्चित किया है। मुख्यमंत्री जी ने कहा कि नमामि गंगे परियोजना से काफी अच्छे परिणाम प्राप्त हो रहे हैं। प्रदेश में कानपुर में गंगा जी में बड़ी मात्रा में सीवर गिरने से मां गंगा प्रदूषित होती थीं। प्रदेश सरकार ने कानपुर में सीसामऊ में सीवर प्वाइण्ट को पूरी तरह से समाप्त किया। आज वही प्वाइण्ट, सेल्फी प्वाइण्ट के रूप में जाना जाता है। उन्होंने कहा कि कानपुर के जाजमऊ में गंगा नदी में जलीय जीव लुप्तप्राय हो गए थे। प्रदेश सरकार के अथक प्रयासों से वर्तमान में गंगा नदी में डॉल्फिन एवं अन्य जलीय जीव देखे जा सकते हैं। प्रत्येक ग्राम पंचायत तथा नगर निकाय में बड़े पैमाने पर अमृत सरोवर बनाए गए हैं। उत्तर प्रदेश की ग्राम पंचायतों में 58,000 से अधिक अमृत सरोवरों का निर्माण किया जा चुका है, जिससे उत्तर प्रदेश में जल के संचयन के साथ–साथ रोजगार के अवसर भी प्राप्त हो रहे हैं। प्रदेश में जल संरक्षण के अनेक प्रयास प्रारम्भ किए गए हैं। प्रधानमंत्री जी की प्रेरणा से प्रदेश में जल जीवन मिशन के कार्य कराए जा रहे हैं। बुन्देलखण्ड तथा विन्ध्य क्षेत्र के गांवों में इस वर्ष के अंत तक शुद्ध पेयजल उपलब्ध होने लगेगा।

भाजपा पर जन विश्वास भरोसा की जीत : सिंह

उत्तर प्रदेश में लखीमपुर गोला गोकर्णनाथ विधान सभा उपचुनाव में समाजवादी पार्टी को करारी शिकस्त देते हुए श्री अमन गिरी ने 34298 वोटों से पराजित कर विजयश्री प्राप्त किया। भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष श्री भूपेन्द्र सिंह चौधरी ने गोला गोकर्णनाथ विधानसभा के उपचुनाव में पार्टी प्रत्याशी श्री अमन गिरी को प्रचण्ड बहुमत से विजयी बनाने के लिए गोला गोकर्णनाथ विधानसभा की जनता का आभार व्यक्त किया है। प्रदेश भाजपा अध्यक्ष ने कहा कि प्रदेश में विधानचुनाव के बाद गोला गोकर्णनाथ के उपचुनाव में भी पार्टी की जीत का संदेश साफ है कि माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी और मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी के नेतृत्व में भाजपा सरकार द्वारा किये जा रहे लोककल्याण के कार्यों के कारण जनता का विश्वास और भरोसा भाजपा पर लगातार बढ़ रहा है। उन्होंने चुनाव में लगे पार्टी कार्यकर्ताओं का भी अभिनंदन करते हुए कहा कि उनके परिश्रम से पार्टी की जीत की राह आसान हुई।

गोला उपचुनाव में पार्टी की जीत के बाद भाजपा के राज्य मुख्यालय पर पार्टी कार्यकर्ताओं ने जीत का जश्न मनाया। पार्टी के प्रदेश महामंत्री (संगठन) श्री धर्म पाल सिंह जी की उपस्थिति में पार्टी कार्यकर्ताओं ने ढोल–नगाड़ो के बीच आतिशबाजी की और एक दूसरे का मुंह मीठा कर जीत की बधाई दी। पार्टी के प्रदेश महामंत्री संगठन श्री धर्म पाल सिंह ने गोला उपचुनाव में भाजपा की जीत के लिए जनता जनार्दन व पार्टी कार्यकर्ताओं का आभार जताया।

मेरठ में पत्रकारों से बातचीत करते हुए पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष श्री भूपेन्द्र सिंह चौधरी ने गोला गोकर्णनाथ विधानसभा उपचुनाव में पार्टी को मिली जीत के लिए जनता का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि भाजपा का संगठन और सरकार दोनों की ही प्राथमिकता में जनता की सेवा करना है। जहां भाजपा सरकार गांव, गरीब, किसान, नौजवान, महिलाओं और समाज के हर वर्ग और तबके के लोगों के हितों को ध्यान में रखकर लोककल्याण के संकल्प के साथ कार्य कर रही है। वहीं भाजपा कार्यकर्ता भी जनता के बीच रहकर सेवा व रचनात्मक कार्यों के माध्यम से जनता की सेवा करने के साथ–साथ जनता के सुख, दुख के भागीदार बनते हैं। जनता का विश्वास मोदी–योगी में बढ़ा है। उन्होंने कहा कि माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भारत विश्व गुरू बनने की ओर अग्रसर है, प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ जी के नेतृत्व में भाजपा सरकार द्वारा किये जा रहे कार्यों के सराहना चारो ओर हो रही है। उन्होंने सपा–बसपा का जिक्र करते हुए कहा कि पूर्व की सरकारों में अपराध और भ्रष्टाचार को संरक्षण मिलता था। मगर अब योगी सरकार में भय मुक्त और उत्तम उत्तर प्रदेश का निर्माण हो रहा है।

एक प्रश्न के उत्तर में गोला उपचुनाव में भाजपा की जीत पर विपक्षी दलों द्वारा की गई बयान बाजी पर बोलते हुए प्रदेश भाजपा अध्यक्ष ने कहा कि भाजपा के कार्यकर्ता दिन–रात जनता के बीच में रहते है, विपक्ष की तरह नहीं जो चुनाव होते ही घर बैठ जाते है। उन्होंने विपक्षी नेताओं पर तंज कसते हुए कहा कि कुछ लोग सिर्फ ट्विटर पर बयान जारी करते हैं। उन्होंने कहा कि भाजपा अब सभी वर्गों की पार्टी है।

नरेन्द्र मोदी के कार्यकाल में देश बुलन्दियों को छू रहा : योगी

हिमांचल प्रदेश के विधान सभा चुनाव में योगी आदित्यनाथ जी प्रदेश की दर्जनभर सभाओं को सम्बोधित किया। सभाओं में उमड़ा जनसमूह मोदी–योगी के नारों से गूंज रहा था। प्रदेश का मूड रिवाज बदल रहा है। इस बार सभी मिथक तोड़ते हुए पुनः कमल खिलने को तैयार है।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि माफिया के खिलाफ उत्तर प्रदेश में हम धड़धड़ा अभियान चलाते हैं, इसलिए ऐसा न हो कि कोई कमजोर सरकार आ जाए और वहां के माफिया चोरी–छिपे दुम दबाकर यहां छिप जाएं।

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि कांग्रेस न तो लोगों को सुरक्षा दे सकती है, न विकास कर सकती है और न ही किसी का कल्याण कर सकती है। अगर कांग्रेस सत्ता में होती तो कोरोना काल में निशुल्क दवाइयां और टीकाकरण तो दूर, वह टेस्ट के पैसे भी खा जाती। योगी ने शुक्रवार को बिलासपुर के घुमारवीं, कांगड़ा के ज्वाली और ज्वालामुखी में चुनावी जनसभाएं कीं। उन्होंने कहा कि योगी ने कहा कि साल 2023 के अंत तक भव्य राम मंदिर का निर्माण होगा। यह विश्व का सबसे बड़ा मंदिर होगा। योगी ने जनसभा में लोगों से पूछा कि क्या कांग्रेस राम मंदिर का निर्माण करवा पाती। भगवान राम के मंदिर निर्माण में कांग्रेस बैरियर बन रही थी। किसी दुश्मन ने भारत की सीमा में घुसने का घुसने या षड्यंत्र करने का प्रयास किया तो हिमाचल के वीर जवान सर्जिकल स्ट्राइक करने के लिए तैयार हैं।

कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कश्मीर में धारा–370 को समाप्त कर आतंकवाद के ताबूत में कील ठोकने का काम किया है। कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के कार्यकाल में देश बुलंदियों को छू रहा है। मोदी ब्रांड एंबेसडर बनकर देश की जनता के दिलों में बस गए हैं। जब भी दूसरे देशों में तनाव की स्थिति उत्पन्न होती है तो सब देशों की नजर भारत पर होती है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस के पास न नीति है और न ही नेता हैं। केंद्र और प्रदेश में कांग्रेस सत्तासीन होने के बाद भी कुछ नहीं करवा पाई। कांग्रेस में परिवारवाद की राजनीति हावी है। कहा कि जिन भी प्रदेशों में चुनाव हो रहे हैं, वहां से कांग्रेस का पत्ता साफ हो रहा है। अब हिमाचल की बारी है।

राज कुमार

जो 55 साल में कुछ नहीं कर पाए उनसे अब उम्मीद न कीजिए। योगी ने में कहा कि जो 55 साल में कुछ नहीं कर पाए, उनसे अब उम्मीद न कीजिए। एक तरफ आस्था का सम्मान, इन्फ्रास्ट्रक्चर का विकास तो दूसरी तरफ माफिया के खिलाफ उत्तर प्रदेश में हम धड़धड़ा अभियान चलाते हैं। इसलिए ऐसा न हो कि कोई कमजोर सरकार आ जाए और वहां के माफिया चोरी–छिपे दुम दबाकर यहां छिप जाएं। कांग्रेस का हाथ माफिया के साथ रहा है। कहा कि मैं उत्तर प्रदेश से आता हूं, वहां 25 करोड़ की आबादी है और 403 विधानसभा क्षेत्र हैं। वहां कांग्रेस केवल दो ही सीटें जीत पाई है। योगी ने ठहाका लगाते हुए कहा कि राम नाम सत्य होने पर भी चार कंधों की जरूरत होती है, लेकिन यूपी में तो कांग्रेस के पास वो भी नहीं है। कहा कि यूपी में शांति और सौहार्द बनाने के लिए जिन लोगों पर हमने डंडा लगाया है, अगर हिमाचल में कांग्रेस आई तो वे लोग यहां घुस जाएंगे और यहां का वातावरण खराब करेंगे।

सम्पर्क अभियान से जनकल्याणकारी नीतियाँ जनता के बीच: लाल सिंह आर्य

भारतीय जनता पार्टी अनुसूचित जाति मोर्चा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री लाल सिंह आर्य ने भाजपा प्रदेश मुख्यालय में पत्रकारवार्ता के दौरान कहा कि भाजपा अनुसूचित जाति मोर्चा का अनुसूचित जाति वर्ग की बस्तियों में सम्पर्क अभियान चला रहा है। उत्तर प्रदेश में अनुसूचित जाति वर्ग के लोग मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ सरकार की कठोर कानून व्यवस्था से प्रसन्न है और कह रहे है कि सपा–बसपा की सरकारों में जो गुंडे हमे परेशान कर रहे थे। आज या तो जेल में है या प्रदेश के बाहर है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के जन्मदिन 17 सितम्बर से संविधान दिवस 26 नवम्बर अनुसूचित जाति मोर्चा बस्ती सम्पर्क अभियान के माध्यम से अनुसूचित जाति वर्ग सम्पर्क कर रहा है। अभी तक 32 हजार से अधिक बस्तियों में सम्पर्क किया जा चुका है। उत्तर प्रदेश में भी 12 हजार अधिक बस्तियों में सम्पर्क हो चुका है।

श्री आर्य ने कहा कि बस्ती सम्पर्क अभियान के तहत मोर्चा के कार्यकर्ता छात्रावासों में भी सम्पर्क कर रहे है। अनुसूचित वर्ग के प्रबुद्ध जनों से बैठकों व सम्मेलनों के माध्यम से सतत सम्पर्क व संवाद हो रहा है।

श्री आर्य ने कहा कि सम्पर्क अभियान में कार्यकर्ता पत्रक लेकर सम्पर्क कर रहे है। पत्रक में माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व की केन्द्र सरकार व मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ जी के नेतृत्व में प्रदेश की भाजपा सरकार की जनकल्याणकारी नीतियों व योजनाएं और अनुसूचित वर्ग के राजनीतिक आर्थिक व सामाजिक उत्थान के साथ उनके सम्मान के लिए किए गये कार्यों का भी उल्लेख है।

उन्होंने कहा कि बस्ती सम्पर्क अभियान के दौरान लोगों के विचारों के अनुसार भाजपा सरकार द्वारा की जा रही संविधान की रक्षा, बाबा साहब भीमराव अम्बेडकर जी का सम्मान, अनुसूचित जाति वर्ग की सुरक्षा व उनके आर्थिक उत्थान को समर्पित योजनाओं से खुश है।

प्रेसवार्ता में भाजपा अनुसूचित जाति मोर्चा के प्रदेश अध्यक्ष श्री रामचन्द्र कन्नौजिया एवं उत्तर प्रदेश सरकार में मंत्री श्री असीम अरूण भी उपस्थित रहे। भारतीय जनता पार्टी सतत प्रवाही संगठन होने के कारण अपनी नीतियों विकास की गतिविधियों योजनाओं को निरन्तर जनता के बीच पहुंचाने का प्रयास करती है। देश सहित उत्तर प्रदेश में भी समाज के सबसे अन्तिम पंक्ति में खड़े व्यक्ति तक सरकार की योजनाओं का लाभ पहुंचे इसके उद्देश्य से सघन जनसम्पर्क अभियान चलाया जा रहा है।

- **प्रधानमंत्री आदर्श ग्राम योजना** – अनुसूचित जाति की 50% से अधिक जनसंख्या वाले गांवों के एकीकृत विकास के लागू की गई है। 2018-21 के बीच की अवधि के लिए 13,216 गांवों की पहचान की गई है और 1291.15 करोड़ की राशि वितरण की गई है। इस योजना में 43 लाख से अधिक परिवार लाभान्वित हो चुके है।
- **अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति (अत्याचार निवारण) अधिनियम 1989** – अनुसूचित जाति के लोगों को बेहतर सुरक्षा और न्याय सुनिश्चित करने के लिए इस अधिनियम में 2015 एवं 2018 में संशोधन कर और सशक्त बनाया गया है। पूर्व में इस अधिनियम में केवल 22 अत्याचारों के प्रकारों का उल्लेख था, जबकि संशोधन के उपरांत 47 अत्याचारों के प्रकारों का समावेश किया गया। फ़ास्ट ट्रैक कोर्ट, प्राइवेट वकील, दोगुनी अनुदान राशि प्रावधान जोड़कर अनुसूचित जाति वर्ग का सशक्तिकरण किया गया है। अत्याचार के खिलाफ शिकायत दर्ज करने के लिए पहली बार राष्ट्रीय हैल्पलाइन नंबर 14566 शुरू किया गया है।
- **अम्बेडकर सामाजिक इन्नोवेशन इक्यूबेशन मिशन (ASIIM)** – अनुसूचित जाति के लिए वेंचर कैपिटल फंड के तहत 10 फरवरी 2021 को उच्च शिक्षण संस्थानों में पढ़ने वाले अनुसूचित जाति के छात्र-छात्राओं के बीच नवाचार और उद्यम को बढ़ावा देने के उद्देश्य से शुरू किया गया था।अब तक 15 कम्पनियों को 0.87 करोड़ रूपए की राशि वितरित की जा चुकी है।
- **प्रधानमंत्री मुद्रा योजना**- प्रधानमंत्री मुद्रा योजना 8 अप्रैल 2015 को माननीय प्रधानमंत्री द्वारा गैर कॉर्पोरेट गैर-कृषि लघुधसूक्ष्म उद्यमों को 10 लाख तक ऋण प्रदान करने के लिए शुरू की गई एक योजना है। अब तक कुल 34.94 करोड़ लाभथियों मे से 5.92 करोड़ (17%) अनुसूचित जाति के लाभाथियों को 1.90 लाख करोड़ रूपये का ऋण दिया गया।

"प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने प्रयागराज कुंभ में स्वच्छता के सिपाहियों के पैर धोकर किया सम्मान"

संकल्प पत्र हिमांचल के विकास का रोड मैप : नड्डा

भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जगत प्रकाश नड्डा जी ने शिमला में हिमाचल प्रदेश विधान सभा चुनाव हेतु भाजपा के संकल्प पत्र को जारी किया और कहा कि यह केवल और केवल भारतीय जनता पार्टी है जो आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में हिमाचल प्रदेश के विकास के लिए प्रतिबद्ध है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि प्रदेश की जनता हिमाचल में रिवाज बदलेगी और फिर से पूरी ताकत के साथ यहाँ कमल खिलेगा। भाजपा का संकल्प पत्र महज घोषणापत्र नहीं है बल्कि यह हिमाचल प्रदेश के विकास का हमारा रोडमैप है। कार्यक्रम में प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री जयराम ठाकुर, प्रदेश भाजपा अध्यक्ष श्री सुरेश कश्यप, केंद्रीय मंत्री श्री अनुराग ठाकुर सहित पार्टी के सभी सांसद, राज्य सरकार के मंत्रीगण, पार्टी पदाधिकारी उपस्थित थे।

श्री नड्डा ने कहा कि पिछले बार के विधान सभा चुनाव में हमारे वरिष्ठ नेता स्वर्गीय अरुण जेटली जी ने हमारा संकल्प पत्र लॉन्च किया था। उस संकल्प पत्र में हमें जितने भी वादे किये थे, हमने उससे कहीं अधिक काम पिछले पांच वर्षों में माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में किया है। हमने अपने संकल्प पत्र में जो भी कहा था, उसे तो पूरा किया ही किया लेकिन जो नहीं कहा, उसे भी पूरा किया और प्रदेश में विकास के नए आयाम को स्थापित किया। प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना हमारी घोषणापत्र का भाग नहीं था लेकिन कोविड काल से अब तक लगातार इस योजना के तहत लगभग 28 लाख परिवारों को लाभ मिल रहा है। दो लाख परिवारों में इज्जत घर बने, पीएम आवास योजना के तहत गरीबों के हजारों घर बने, शत–प्रतिशत विद्युतीकरण हुआ और लगभग 96 प्रतिशत घरों को नल से जल योजना से जोड़ा जा चुका है। विगत पांच वर्षों में आयुष्मान भारत से जहां हिमाचल प्रदेश के लगभग 4.70 लाख लोग जोड़े गए, वहीं हमारी प्रदेश सरकार की हिमकेयर योजना से भी लगभग 5.30 लाख परिवार जोड़े गए। इसी तरह प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना से हिमाचल प्रदेश के लगभग 1.37 लाख परिवार को मुफ्त गैस कनेक्शन मिला, वहीं मुख्यमंत्री गृहिणी सुविधा योजना से लगभग 3.23 लाख परिवार लाभान्वित हुए। अटल पेंशन योजना से लगभग 2.80 लाख लोग जुड़े तो मातृत्व सुरक्षा अभियान से लगभग 3 लाख बहनों को लाभ मिला।

माननीय राष्ट्रीय अध्यक्ष ने कहा कि बीते पांच वर्षों में हिमाचल प्रदेश में माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में हिमाचल प्रदेश में लगभग 6,000 किमी ग्रामीण सड़कें बनी हैं। पांच साल में बिलासपुर में एम्स बन कर तैयार हुआ। हिमाचल प्रदेश में आईआईएम का काम बहुत जल्द ही पूरा होने वाला है। मंडी में आईआईटी बना है। ऊना में बल्क ड्रग प्रार्क बन रहा है और नालागढ़ में मेडिकल डिवाइस पार्क बन रहा है। आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने राजनीति में विकास की कार्यसंस्कृति स्थापित की है। हम जब भी चुनाव में जाते हैं तो अपने विकास कार्यों के आधार पर जाते हैं। जनता को हमारी नीति में विश्वास है, हमारे नेतृत्व में विश्वास है। इसलिए हमें पूर्ण विश्वास है कि इस बार के हिमाचल प्रदेश विधानसभा चुनाव में जनता राज नहीं, रिवाज बदलेगी।

श्री नड्डा ने कहा कि भाजपा का संकल्प पत्र समाज में समानता लाने के लिए कटिबद्ध है। हम युवाओं और किसानों का सशक्तिकरण करेंगे और हॉर्टीकल्चर को बढ़ावा देंगे। राज्य में बनने वाली भाजपा सरकार सरकारी कर्मचारियों को न्याय दिलाएगी और धार्मिक पर्यटन को आगे बढ़ाएगी। हमने अपने संकल्प पत्र में 11 प्रतिबद्धताएं सूचीबद्ध की हैं और मिशन मोड में हम अगले पांच वर्षों में इसे पूरा करेंगे।

1. भाजपा सरकार हिमाचल प्रदेश में समान नागरिक संहिता लागू करेगी। इसके लिए विशेषज्ञों की एक गठित की जायेगी और उनके रिपोर्ट के आधार पर यूनिफ़ॉर्म सिविल कोड को लागू किया जाएगा।

2. भाजपा सरकार मुख्यमंत्री अन्नदाता सम्मान निधि की शुरुआत करेगी जिसके अंतर्गत छोटे किसानों को सालाना रु0 3000 की राशि दी जाएगी जो प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि के अंतर्गत दिए जा रहे हैं रु0 6000 के अतिरिक्त होगी। इससे हिमाचल प्रदेश के लगभग 9.83 लाख किसानों को लाभ होगा।

3. भाजपा सरकार चरणबद्ध तरीके से हिमाचल प्रदेश के युवाओं के लिए 8 लाख रोजगार के अवसरों का सृजन करेगी। सरकारी नौकरियों और इकॉनोमिक जोन में ये रोजगार के अवसर उपलब्ध कराये जायेंगे।

4. भाजपा सरकार यह सुनिश्चित करेगी कि अगले 5 वर्षों में

राज्य के सभी गाँवों को प्रधानमंत्री ग्रामीण सड़क योजना के अंतर्गत पक्की सड़कों यानी ऑल वेदर रोड से जोड़ा जाए। इस पर लगभग 5,000 करोड़ रुपये का खर्च आयेगा।

5. भाजपा सरकार शक्ति नाम का एक कार्यक्रम शुरू करेगी और रु0 12000 का निवेश अगले 10 सालों में करेगी जिसके माध्यम से सभी प्रमुख मंदिरों के आसपास परिवहन और भौतिक बुनियादी ढांचे को विकसित किया जाएगा। इन मंदिरों को प्रमुख शहरों से हिम सर्किट के माध्यम से विशेष बसों द्वारा जोड़ा जाएगा।

6. भाजपा सरकार सेब पैकेजिंग सामग्री पर किसानों द्वारा जीएसटी भुगतान को 12रु0 तक सीमित कर देगी। किसी भी प्रकार की अतिरिक्त जीएसटी लागत राज्य सरकार द्वारा वहन की जाएगी। सरकार के इस निर्णय से प्रदेश के लगभग 1.70 लाख किसानों को फायदा होगा।

7. भाजपा सरकार राज्य में पांच नए मेडिकल कॉलेज स्थापित करेगी और प्रत्येक विधानसभा क्षेत्र में मोबाइल क्लीनिक की संख्या दोगुनी करेगी। इसमें रेगुलर हेल्थ चेक–अप की भी सुविधा उपलब्ध होगी।

8. भाजपा सरकार 900 करोड़ रुपये के कोष के साथ स्टार्टअप योजना स्थापित करेगी जिससे युवाओं के रोजगार सृजन हेतु स्टार्टअप को बढ़ावा मिलेगा।

9. भाजपा सरकार हुतात्मा सम्मान राशि योजना के अंतर्गत विभिन्न परिस्थितियों में शहीद हुए हुतात्मा सैनिकों के आश्रितों को दी जाने वाली अनुग्रह राशि में उल्लेखनीय वृद्धि करेगी।

10. भाजपा सरकार कानून के अनुसार वक्फ संपत्तियों का सर्वे कराएगी और ऐसी संपत्तियों के अवैध उपयोग की जांच करने के लिए न्यायिक आयोग गठित करेगी।

11. भाजपा सरकार द्वारा सरकारी कर्मचारियों के वेतन में विसंगतियों को दूर किया जाएगा।

माननीय राष्ट्रीय अध्यक्ष ने कहा कि हमारा स्पष्ट मानना है कि जब तक मातृ सशक्तिकरण नहीं होता, तब तक परिवार का और आने वाली पीढ़ियों का सशक्तिकरण नहीं हो सकता। मातृ सशक्तिकरण के लिए श्री नरेन्द्र मोदी सरकार ने कई कार्य किया है। मैं प्रदेश की भाजपा इकाई को बधाई और साधुवाद देता हूँ कि उन्होंने मातृ सशक्तिकरण के लिए अलग से एक संकल्प पत्र जारी करने का निर्णय लिया जिसे हमने स्त्री शक्ति संकल्प पत्र का नाम दिया है। इसमें भी हमने 11 संकल्प लिए हैं।

1. हिमाचल प्रदेश में बनने वाली डबल इंजन वाली भारतीय जनता पार्टी सरकार बीपीएल परिवारों की लड़कियों के लिए वित्तीय सहायता को मौजूदा 31,000 रुपये से 51,000 रुपये तक बढ़ाकर मुख्यमंत्री शगुन योजना का विस्तार करेगी।

2. भाजपा सरकार छठी से 12वीं कक्षा तक की स्कूल की छात्राओं को साइकिल और उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाली लड़कियों को स्कूटी उपलब्ध कराएगी।

3. हिमाचल प्रदेश की भारतीय जनता पार्टी सरकार 500 करोड़ रुपए का एक विशेष कोष स्थापित करेगी जिसके माध्यम से महिला उद्यमियों हेतु होमस्टे स्थापित करने के लिए ब्याज मुक्त ऋण उपलब्ध कराया जाएगा। प्रदेश की भाजपा सरकार महिला स्वयं सहायता समूह को दिए जाने वाले ऋणों की ऊपरी सीमा को बढ़ाकर उन्हें सशक्त बनाएगी और उन्हें दिए जाने वाले ऋण पर लगने वाले ब्याज दर को घटाकर 2रु0 करेगी।

4. हिमाचल प्रदेश की भारतीय जनता पार्टी सरकार मां और बच्चे के उचित स्वास्थ्य और देखभाल को सुनिश्चित करने के लिए गर्भवती महिलाओं को रु025000 की सहयोग राशि प्रदान करेगी।

5. भाजपा सरकार एक नई देवी अन्नपूर्णा योजना के माध्यम से राज्य में गरीब परिवारों की महिलाओं को हर वर्ष तीन मुफ्त रसोई गैस सिलिंडर प्रदान करेगी।

6. हिमाचल प्रदेश में बनने वाली भारतीय जनता पार्टी सरकार अटल पेंशन योजना में गरीब परिवारों की 30 वर्ष से अधिक आयु की सभी महिलाओं को सम्मिलित करेगी।

7. भाजपा सरकार सरकारी स्कूलों की 12वीं कक्षा में शीर्ष 5000 रैंक वाली छात्राओं को उनके स्नातक तक की पढ़ाई के दौरान 2500 रुपये प्रति माह की छात्रवृत्ति राशि प्रदान करेगी।

8. भाजपा सरकार राज्य के ग्रामीण महिलाओं के लिए उचित मूल्य की दुकान के माध्यम से उनके पशुधन हेतु गुणवत्तापूर्ण चारे की खरीद और वितरण को आसान बनाने के लिए एक प्रणाली स्थापित करेगी।

9. हिमाचल प्रदेश की भाजपा सरकार सभी महिलाओं को ऐसी बीमारियों की जांच और इलाज के लिए जो वर्तमान में हिम केयर कार्ड में कवर नहीं है, उसे स्त्री शक्ति कार्ड के माध्यम से कवरेज प्रदान करेगी।

10. भारतीय जनता पार्टी सरकार राज्य के सभी 12 जिलों में से प्रत्येक में दो बालिका छात्रावासों का निर्माण करेगी जो कि उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाली लड़कियों को समर्पित होगी।

11. भाजपा सरकार राज्य के सरकारी नौकरियों और शैक्षणिक संस्थानों में महिलाओं के लिए 33रु0 आरक्षण भी सुनिश्चित करेगी।

श्री नड्डा ने कहा कि हमारे इरादे बुलंद हैं। हम प्रदेश को आगे ले जाना चाहते हैं। कांग्रेस का घोषणापत्र विजन लेस और वजन लैस है। कांग्रेस ने हमेशा ही हिमाचल प्रदेश की जनता के साथ विश्वासघात किया है। हिमाचल प्रदेश का विकास तभी हुआ है जब केंद्र में और राज्य में भारतीय जनता पार्टी की सरकार आई है। मुझे विश्वास है कि हिमाचल प्रदेश की जनता पुनः भाजपा को अपना आशीर्वाद देगी और राज्य में एक बार पुनः भारतीय जनता पार्टी की सरकार बनेगी।

देश को चाहिए अल्पसंख्यकवाद से मुक्ति!

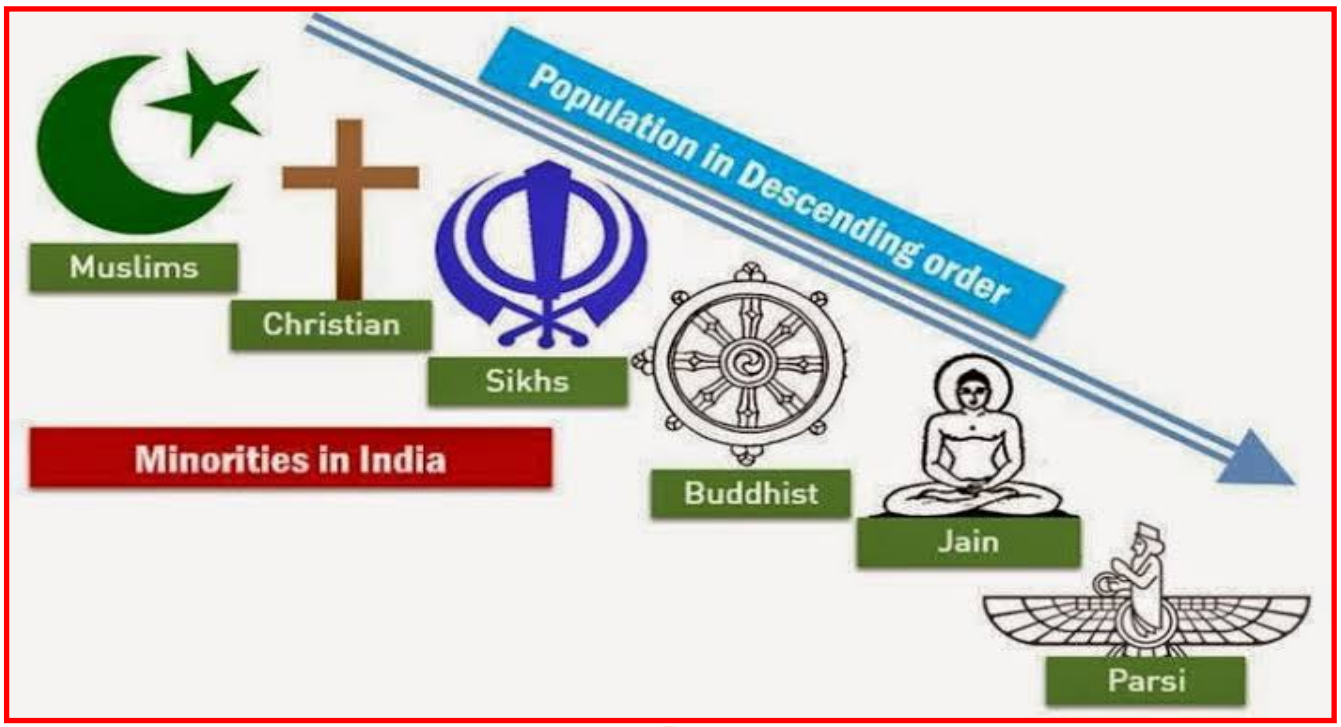

हृदय नारायण दीक्षित

गरीबी और संपन्नता पंथिक या मजहबी नहीं होते। लेकिन भारत में मजहब आधारित अल्पसंख्यक हैं। दार्शनिक वालटेयर ने समुचित विमर्श के लिए शब्दों की परिभाषा को अनिवार्य बताया था। सभी अधिनियमों में प्रयुक्त महत्वपूर्ण शब्दों की परिभाषाएं होती हैं। संविधान (अनुच्छेद 366) में 30 महत्वपूर्ण शब्दों की परिभाषाएं हैं। लेकिन 'अल्पसंख्यक' की परिभाषा नहीं है। सर्वोच्च न्यायपीठ में एक संस्था ने राष्ट्रीय अल्पसंख्यक आयोग अधिनियम 1992 व राष्ट्रीय अल्पसंख्यक आयोग को असंवैधानिक घोषित करने की याचिका दी है। यह विचारार्थ स्वीकार कर ली गई है। भाजपा नेता अश्विनी कुमार की याचिका में राष्ट्रीय अल्पसंख्यक शिक्षा संस्थान अधिनियम 2004 की धारा 2एफ पर भी विचार चल रहा है। राज्य स्तर पर अल्पसंख्यकों की पहचान की मांग की गई है। इसके भी पहले एक याचिका में राष्ट्रीय अल्पसंख्यक आयोग अधिनियम 1992 की धारा 2सी को चुनौती दी गई है और अल्पसंख्यक की परिभाषा की मांग की गई है। संविधान के अनुच्छेद 29 व 30 का शीर्षक, 'अल्पसंख्यक वर्गों के हित संरक्षण व शिक्षा संस्थानों के संचालन' है। मजहबी अल्पसंख्यकों की संख्या भारी होने के बावजूद अल्पसंख्यकों की विशेष सुविधाएं हैं। विशेषाधिकार हैं। न्यायालय ने मुकदमे में केन्द्र को नोटिस भेजा था। केन्द्र ने स्टेटस रिपोर्ट देते हुए कहा है कि इस संवेदनशील मामले के दूरगामी परिणाम होंगे। 14 राज्यों ने अपना अभिमत दे दिया है। 19 राज्यों और केन्द्र शासित राज्यों की राय प्रतीक्षित है। सबकी राय के लिए कुछ और समय देने की मांग की गई है। मामले में खासी बहस छिड़ गई है।

अल्पसंख्यकवाद की समस्या राष्ट्रीय एकता में बाधक है। इसके स्रोत कट्टरपंथी साम्प्रदायिकता में हैं। कम्युनल अवार्ड ब्रिटिश सत्ता और कट्टरपंथी तत्वों की साजिश का नतीजा था। देश टूट गया।

आखिरकार मजहबी आधार पर अल्पसंख्यक होने का औचित्य क्या है? किसी समूह को अल्पसंख्यक घोषित करने की अहर्ता क्या है? यहां सभी नागरिकों को समान मौलिक अधिकार हैं। मूलभूत प्रश्न है कि सभी नागरिकों को मौलिक अधिकार देने वाले राष्ट्र में कोई अल्पसंख्यक क्यों है? सवाल और भी हैं। क्या किसी पंथिक या मजहबी सम्प्रदाय की अल्पसंख्या ही अल्पसंख्यक सुविधाएं लेने का आधार है। पंथ या मजहब ही अल्पसंख्यक होने का आधार क्यों हैं? संविधान की उद्देशिका में राष्ट्र की मूल इकाई 'हम भारत के लोग' हैं। राष्ट्र एक है। संस्कृति एक है। संविधान एक है। अल्पसंख्यकों के लिए

अलग से विचार औचित्यपूर्ण नहीं है। देश में हिन्दू बहुसंख्यक हैं। मुसलमान, पारसी, ईसाई, सिख, बौद्ध, यहूदी अल्पसंख्यक हैं। 2011 की जनगणना के अनुसार पंजाब में हिन्दू 38.40 प्रतिशत हैं। इसी तरह अरुणाचल प्रदेश में 29 प्रतिशत, मणिपुर में 31.39 प्रतिशत, जम्मू कश्मीर में 28.44 प्रतिशत, नागालैण्ड में 8.75 प्रतिशत, मिजोरम में 2.75 प्रतिशत हिन्दू हैं। इन्हें अल्पसंख्यक नहीं माना जाता। हिन्दू अल्पसंख्यक होकर भी अल्पसंख्यकों के लिए चिन्हित सुविधाओं का लाभ नहीं पाते।

अल्पसंख्यक विशेषाधिकारों के कारण मूल अधिकारों का उल्लंघन होता है। संविधान (अनुच्छेद 15) में 'धर्म, मूल, वंश, जाति, लिंग या जन्म के आधार पर भेदभाव का निषेध है।' लेकिन अल्पसंख्यक हितैषी कानून इस मौलिक अधिकार का उल्लंघन हैं। सबके समान अधिकार हैं लेकिन अल्पसंख्यकों के लिए विशेष सुविधाएं हैं। उनकी शिक्षण संस्थाएं स्वायत्त हैं। मौलिक अधिकार संविधान का मूल ढांचा हैं। मूल ढाँचे का भाग होने के कारण ये बाध्यकारी हैं। बावजूद इसके साम्प्रदायिक आधार पर चिन्हित अल्पसंख्यक तमाम सुविधाएं लेते हैं। अनेक समुदाय राष्ट्रीय स्तर पर अल्पसंख्यक हैं। किसी राज्य विशेष में वे बहुसंख्यक हैं। वही कुछ राज्यों में अल्पसंख्यक हैं। बहुसंख्यक समुदाय को लगता है कि उन्हें तमाम अधिकारों से वंचित किया गया है। दोनों के मध्य इसे लेकर तनाव भी रहता है। बहुसंख्यक अपने ही देश में दूसरे दर्जे के नागरिक हो जाते हैं। अल्पसंख्यक स्वयं को विशिष्ट मानते हैं। वे और अधिकार चाहते हैं। एक देश में दो विधान दिखाई पड़ते हैं। अल्पसंख्यकवादी राजनीतिज्ञ और दल अल्पसंख्यकों को उकसाते रहते हैं कि उनकी उपेक्षा की जा रही है। वे अल्पसंख्यकों के लिए संघर्ष का आश्वासन देते हैं।

संविधान में, ''भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भा चारे की भावना का निर्माण करना मूल कर्तव्य है। शर्त है कि ऐसी भावना, भाषा, पंथ, मजहब और क्षेत्रीय भेदभाव से परे होनी चाहिए।''

अल्पसंख्यकवाद की समस्या राष्ट्रीय एकता में बाधक है। इसके स्रोत कट्टरपंथी साम्प्रदायिकता में हैं। कम्युनल अवार्ड ब्रिटिश सत्ता और कट्टरपंथी तत्वों की साजिश का नतीजा था। देश टूट गया। साम्प्रदायिक तत्वों को अलग देश मिला। तो भी अल्पसंख्यक विशेष सुविधाएं मांग रहे थे। संविधान सभा ने अल्पसंख्यक अधिकारों पर सभा की समिति बनाई। सरदार पटेल इस समिति के सभापति थे। उनकी रिपोर्ट पर सभा में बहस (27.08.1947) हुई। पी० सी० देशमुख ने कहा कि, ''इतिहास में अल्पसंख्यक से अधिक क्रूरतापूर्ण और कोई शब्द नहीं है। इसी के कारण देश बंट गया।'' संविधान सभा के उपाध्यक्ष एच० सी० मुखर्जी ने कहा, ''यदि हम एक राष्ट्र चाहते हैं तो मजहब के आधार पर अल्पसंख्यकों को मान्यता नहीं दे सकते।'' बिलकुल ठीक कहा था। भारत बहुसंख्यक और अल्पसंख्यक समझौते का परिणाम नहीं है।

भारत संप्रभु संवैधानिक सत्ता है। तजम्मुल हुसैन ने कहा, ''हम अल्पसंख्यक नहीं हैं। ये शब्द अंग्रेजों ने निकाला था। वे चले गए। अब अल्पसंख्यक शब्द को डिक्शनरी से हटा देना चाहिए।'' पं० जवाहर लाल नेहरू ने कहा, ''सभी वर्ग विचारधारा के अनुसार समूह बना सकते हैं धर्म या मजहब आधारित वर्गीकरण नहीं किया जा सकता।'' एम० ए० आयंगर ने तुर्की के अल्पसंख्यकों के संरक्षण के संधिपत्र का उल्लेख किया कि गैर मुसलमान तुर्की नागरिक भी मुसलमानों के समान ही नागरिक व राजनैतिक अधिकारों का उपभोग करें। मैं अल्पसंख्यक शब्द को पसंद नहीं करता।'' पटेल ने अल्पसंख्यकवादियों से प्रश्न किया ''आप स्वयं को अल्पसंख्यक क्यों मानते हैं?''

पंथ और मजहब आधारित अल्पसंख्यक विशेषाधिकार दोतरफा अलगाववाद बढ़ाते हैं। वे अल्पसंख्यकों में अलगाववाद का विचार देते हैं। दूसरी ओर सुविधा से वंचित बहुसंख्यक वर्ग को निराश करते हैं। अल्पसंख्यकवाद राष्ट्रीय एकता के लिए खतरा है। देश को अल्पसंख्यकवाद के पचड़े से मुक्त करना सर्वोच्च प्राथमिकता है। सभी नागरिकों को प्रत्येक प्रकार के अवसर दिलाने के प्रयास जारी हैं। गरीबी और अमीरी के आधार पर ही वर्गों समूहों का विचार किया जाना चाहिए। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में 'सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास' अभियान चल रहा है। देश सतत् प्रगति कर रहा है। विश्व में भारत की प्रतिष्ठा बढ़ी है। जाति पंथ सम्प्रदाय की अस्मिताएं समग्र वैभव के लक्ष्य में बाधक हैं। भारत का प्रत्येक नागरिक देश की उन्नति चाहता है। शिक्षा और सम्पदा में कुछ वर्ग पिछड़े और वंचित हो सकते हैं। उन वर्गों को प्रत्येक अवसर देकर आगे ले चलना राष्ट्रीय कर्तव्य है।

संविधान की उद्देशिका में **"सबको प्रतिष्ठा और अवसर की समता प्राप्त कराने"** की शपथ है। संविधान में, "भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भाईचारे की भावना का निर्माण करना मूल कर्तव्य है। शर्त है कि ऐसी भावना, भाषा, पंथ, मजहब और क्षेत्रीय भेदभाव से परे होनी चाहिए।" अल्पसंख्यक और बहुसंख्यक की बहस का समय बीत चुका है। माना गया था कि युद्ध या अंतर्राष्ट्रीय समझौते के कारण किसी राज्य क्षेत्र के निवासी अपने घर में रहने के बावजूद दूसरे देश के निवासी घोषित हो जाते हैं। राज्य क्षेत्र में परिवर्तन से सभ्यता व संस्कृति प्रभावित होती है। उन्हें विशेष संरक्षण की आवश्यकता होती है। भारत में ऐसी स्थिति नहीं है। भारत विभाजन के समय मुस्लिम लीग ने अलग देश मांगा। यहां शेष रहे मुसलमानों ने अपनी इच्छा से भारत को चुना। अंतर्राष्ट्रीय अर्थ में भी भारत में कोई अल्पसंख्यक नहीं है। आवश्यकता है कि देश अल्पसंख्यकवाद से मुक्त हो।

राष्ट्रीय स्वाभिमान का संस्कार

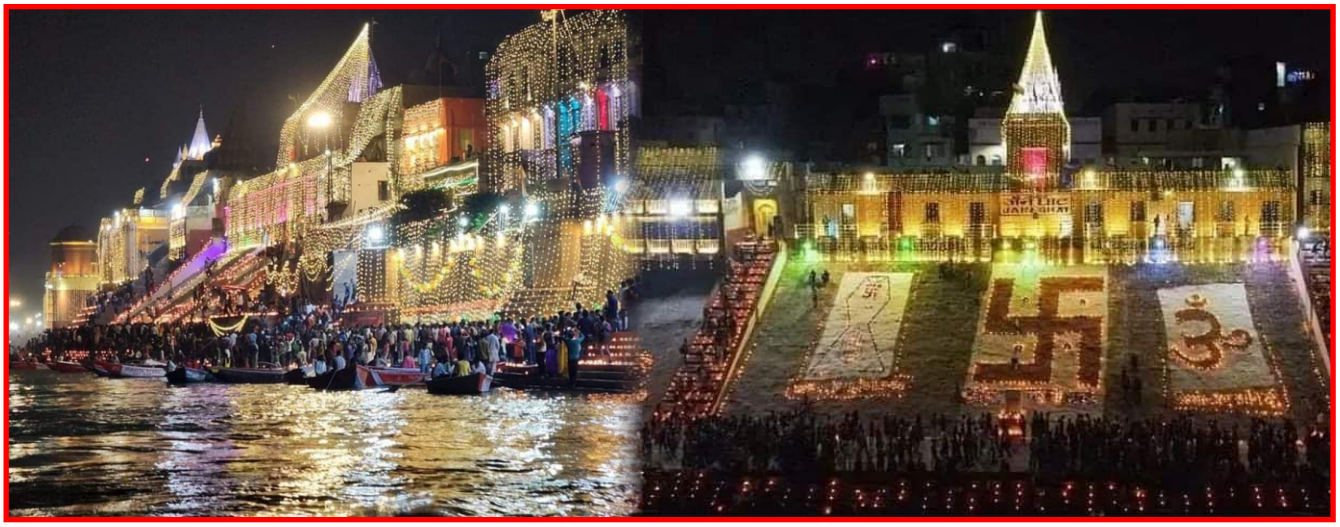

डॉ दिलीप अग्निहोत्री

भारत कभी विश्व गुरु था. ब्रिटिश काल तक विश्व व्यापार में अधिकांश हिस्सा भारत का हुआ करता था.प्रचीन भारत में ज्ञान–विज्ञान और शिक्षण संस्थानों के अनगिनत केंद्र थे.दुनिया की सर्वाधिक प्राचीन सभ्यता संस्कृति भारत की है. पिछले आठ वर्षों में देश का नेतृत्व राष्ट्रीय गौरव की इसी भावना के अनुरूप कार्य कर रहा है. वह तत्व पुनर्जीवित हो रहे हैं, जिन्होंने भारत को विश्व गुरु पद पर विभूषित किया था. इसमें कोई संदेह नहीं कि भारत में आज भी विकसित बनने की पूरी क्षमता है.देश के वर्तमान नेतृत्व ने इस क्षमता को पहचाना है. इसी प्रक्रिया में ही बाधक तत्वों की पहचान हुई है. सेक्युलर राजनीति के नाम पर देश को आत्म गौरव से विहीन बनाया गया. परिवार आधारित पार्टियों को भी ऐसी ही राजनीति पसन्द थी.लेकिन अब देश में राष्ट्रीय गौरव का संचार हो रहा है.प्रधानमंत्री

नरेन्द्र मोदी ने विकसित भारत के लिए पांच प्रण का महत्त्व रेखांकित किया. हमको भारतीय विरासत पर गर्व करना चाहिए. वैश्विक समस्याओं का समाधान भारतीय चिंतन के माध्यम से सम्भव है. भारत लोकतंत्र की

जननी है। इसका भी देश को गर्व होना चाहिए. दासता के किसी भी निशान को हटाना, विरासत पर गर्व,एकता और अपने कर्तव्यों को पूरा करना सभी का दायित्व है.इससे भारत को विकसित बनाया जा सकता है.पंच प्रण पर अपनी शक्ति,संकल्पों और सामर्थ्य को केंद्रित करना आवश्यक है.

भ्रस्टाचार और परिवार वाद भारत को विकसित बनाने की राह में सबसे बड़े बाधक है.देश के हर संस्थान में परिवारवाद को पोषित किया गया है. विश्वस्तरीय खेल प्रतियोगिताओं में देश के खिलाड़ियों को पहले से अधिक पदक मिल रहे हैं.नरेन्द्र मोदी ने ठीक कहा कि यह प्रतिभाएं पहले भी भारत में थीं,लेकिन भाई भतीजावाद के कारण वह नहीं उभर पायीं। भारत को विकसित बनाने के मार्ग में दूसरी सबसे बड़ी बाधा भ्रष्टाचार है. इसमें भी परिवारवादी पार्टियों पर सर्वाधिक आरोप लगते हैं. नरेन्द्र मोदी ने कहा कि भ्रष्टाचार देश को दीमक की तरह खोखला कर रहा है.उससे देश को लड़ना ही होगा। सरकार का प्रयास है कि जिन्होंने देश को लूटा है.उनको लूट का धन लौटाना पड़े। मोदी सरकार ने व्यवस्था में व्यापक सुधार किया है. चालीस करोड़ जनधन खाते खोले गए.विगत आठ वर्षों में डायरेक्ट बेनिफिट ट्रांसफर के द्वारा आधार,मोबाइल जैसी आधुनिक व्यवस्थाओं का उपयोग करते हुए देश के दो लाख करोड़ रुपये को गलत लोगो के हांथों तक जाने से रोक दिया गया. आत्मनिर्भर अभियान भी भारत को विकसित बनाने में सहायक सिद्ध हो रहा है. इसमें निजी क्षेत्र की भूमिका भी महत्वपूर्ण है. पीएलआई योजनाओं के माध्यम से, हम दुनिया के विनिर्माण बिजलीघर बन रहे हैं। लोग मेक इन इंडिया के लिए भारत आ रहे हैं। नरेंद मोदी ने लाल किले की प्राचीर से विकसित भारत के पंच प्रण का उद्घोष किया था.पंच प्राण के माध्यम से भारत को एक विकसित देश बनाने का संकल्प लेने का आह्वान किया था। 'पंच प्रण' में देश को विकसित भारत के रूप में आगे बढ़ाने, गुलामी के सभी निशान मिटाने, भारत की विरासत पर गर्व करने, देश की एकता और अखंडता को मजबूत करना और देश के प्रति नागरिकों के कर्तव्यों का संकल्प शामिल है। अमृत काल के लिए प्रधानमंत्री के 'पंच प्रण' के संदेश को जन–जन तक पहुंचाने और जागरुकता लाने के लिए पिछले दिनों हिन्दुस्थान समाचार बहुभाषी न्यूज एजेंसी और इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र ने संयुक्त रूप से 'दीपोत्सवः पंच प्रण' कार्यक्रम की श्रृंखला प्रारंभ की थी. इसमें 'पंच प्रण' लेते हुए प्रत्येक दिन

पचहत्तर सौ दीप प्रज्वलित किए गए। कार्यक्रम का आदर्श वाक्य 'एक दीप राष्ट्र के नाम' था। इस तीन दिवसीय कार्यक्रम में पांच

सत्रों में प्रधानमंत्री द्वारा घोषित 'पंच प्रण' को केंद्र में रखकर व्याख्यान के पांच विषय और सत्र आयोजित किए गए। इन विषयों पर अलग–अलग सत्र में वक्ताओं ने अपने विचार प्रकट किए। इसके अलावा सांस्कृति कार्यक्रम आयोजित किये गए।पंच प्रण' कार्यक्रम में संत अतुल कृष्ण महाराज,केरल के राज्यपाल आरिफ मुहम्मद खान,चिंतक, विचारक एस. गुरुमूर्ति, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अखिल भारतीय प्रचार प्रमुख सुनील आंबेकर, सहित कई साहित्य, संगीत और कला के क्षेत्र से जुड़े लोगों ने अपने विचार व्यक्त किए। यह बताया गया कि एकता एकात्मता का सिद्धांत भारतीय संस्कृति का प्राण है। उसे आधुनिक

वैज्ञानिकों ने गॉड पार्टिकल के रूप में सिद्ध किया। भारतीय वैज्ञानिकों ने पहले ही कहा है कि जड़ और चेतन दोनों में परमात्मा है। जिसकी सत्ता होती है वह सत्य है। वाणी,चिंतन और कर्म के बल पर परमात्मा की अनुभूति करते हुए आप हर संकट से पार हो जाएंगे। अतुल कृष्ण भारद्वाज ने कहा कि प्रधानमंत्री द्वारा दिए पंच प्रण पंच महाभूत है। एकता एकात्मता को जानने के लिए सत्य को जानना होगा और राम नाम ही सत्य है। जो जड़ में से चेतन को प्रकट कर दें, वही सत्य है। प्रत्येक कण में परमात्मा को देंखे, तब पंच प्रण की शुरूआत होगी। परमात्मा ने सबसे सुंदर देश भारत बनाया है। भारत में छह ऋतुएं हैं। प्रत्येक संस्कृति के व्यक्ति को अपनी जलवायु के अनुसार जीवन यापन करना चाहिए। आसुरी विद्याएं तोड़ने और दैवीय विद्याएं जोड़ने का काम करती है। सबके सुख की कामना करने से ही विकसित भारत कहलाएगा। तभी भारत विश्वगुरु बनेगा। भारत अपनी विद्याओं के आधार पर विकसित होगा। आरिफ मोहम्मद ने कहा कि अनेक सभ्यताएं इस बात का दम्भ भरती हैं कि उन्होंने भारत पर आक्रमण कर और यहां राज कर हमें सभ्य बनाया। सच्चाई यह है कि वे सभ्यताएं जिस समय बर्बर थीं, जीने का रास्ता तलाश रही थीं उस समय भारत भूमि अपनी ज्ञान सम्पदा के दम पर 'सोने की चिड़िया' थी। अतीत में भारत 'सोने की चिड़िया' इसलिए नहीं था कि अकूत धन संपदा हमारे पास थी, बल्कि हम ज्ञान का केंद्र थे। भारतीय दर्शन का मानना है कि जिसने ज्ञान प्राप्त कर लिया, ब्रह्म को प्राप्त कर लिया उसे इस सम्पदा को साझा करने की भूख जग जाती है। कुछ लोग कहते हैं कि उन्होंने भारत पर राज किया और ताज महल, लाल किला दिया, उन्हें यह जानना चाहिए कि अरब में पैगम्बर हजरत मुहम्मद ने बहुत पहले ही कहा था कि भारत भूमि से ज्ञान की ठंडी हवा के झोंके आ रहे हैं। अतीत में यह हमारी ज्ञान, संपदा की देन थी। विश्व के हर विद्वान ने जो दुनिया के इतिहास पर जो कुछ भी लिखा है उसमें सबसे पहले एक बड़ा हिस्सा भारत पर रचा–पढ़ा गया। भारत इकलौता देश है जो ज्ञान और प्रज्ञा के संवर्धन के लिए जाना जाता है। एस गुरुमूर्ति ने कहा कि समय की आवश्यकता है कि हम भारत को समझें. 'पंच प्रण' का विचार तभी साकार होगा जब हम भारत के बारे में फैले भ्रम का निवारण करेंगे. जिस भारत को हम जानते हैं वह प्रोपेगंडा पर आधारित है। हम अपने भारत के गौरवशाली इतिहास से अनभिज्ञ हैं। भारत केवल आध्यात्मिक शक्ति के तौर पर ही समृद्ध नहीं रहा, बल्कि अर्थशास्त्र, विज्ञान, सामाजिक व्यवस्था के विषयों में भी यूरोप और अन्य सभ्यताओं से अधिक आगे रहा था। भारत की आर्थिक व्यवस्था बेहद मजबूत थी और इसने कभी धर्म के नाम पर कत्लेआम नहीं किया। विश्व की आबादी का अठारह प्रतिशत हिस्सा हमारे पास है, धरती का दो प्रतिशत भू–क्षेत्र हमारे पास है और विश्व में सबसे ज्यादा पशुधन हमारे पास है। दुनिया भर में होने वाले मांस की खपत में हम सबसे कम है। स्वामी चिन्मयानंद ट्रस्ट के प्रमुख स्वामी प्रकाशानन्द ने कहा कि हमारे वेद–शास्त्रों में कर्तव्यपूर्ति का जितना ज्ञान घर–घर पहुंचेगा उतना ही हमारा समाज सशक्त होगा, एक सशक्त समाज ही मजबूत और विकसित राष्ट्र तैयार करता है। नागरिक के रूप में हमारा कर्तव्य है कि अपने आसपास की समस्या, समाज की समस्या के लिए सरकार और प्रशासन पर ही निर्भर न रहें, बल्कि एकजुट होकर राह की हर चुनौती का सामना करें। जीवन में क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए इसका व्यापक ज्ञान हमारे वेदों में है। वेदों में दिए कर्तव्य बोध के ज्ञान को धर्मशास्त्र कहते हैं। इसलिए वेदों को पढ़ना आवश्यक है। राष्ट्र की संस्कृति का आधार कर्तव्यबोध पर आधारित है। श्रीराम ने वनवास के दिन ही संसार को निश्चरहीन करने का संकल्प लिया था। यह कर्तव्यबोध है। कर्तव्यबोध से परिपूर्ण होना बहुत आवश्यक है। इससे भारत अपने पुराने वैभव पर लौटेगा। हमारा डीएनए एक है. हिन्द, हिन्दू और हिंदुत्व से ही दुनिया में शांति है। इंद्रेश कुमार ने कहा कि भारत तीर्थों, त्योहारों और मेलों का देश है। तीर्थ, त्योहार और मेले ही एकता और एकात्मता का मार्ग है। ये हमें कपड़ा, रोटी, छत और संस्कार देते हैं, इसलिए भारतीय मानवता और जीवन मूल्य सर्वश्रेष्ठ है। मेलों और त्योहारों से करोड़ों लोगों को रोजगार, रोटी मिलती है। कुटीर उद्योगों को बढ़ावा मिलता है। एक ही कुल और डीएनए के होने के बाद भी कंस राक्षस कहलाएं तो श्रीकृष्ण भगवान बन गए। हम अपना धर्म बदल सकते हैं पूर्वज नहीं बदल सकते। भोग में सम्मान हो सकता है, पूजा नहीं हो सकती। त्याग में पूजा होती है। इसी बल पर भारत विश्वगुरु बना। हम भोगवाद की दुनिया नहीं है, आदेश, त्याग और सेवा का समाज है। हमें दुनिया का नेतृत्व करना है। कर्म और किरदार तय करता है कि अच्छा है या बुरा है। ईसाई, इस्लाम में बहुत भेद है। हर समूह की पहचान उसके देश से होती है। हमारे देश के पांच नाम है, बाकी के एक ही है। जननी और जन्मभूमि स्वर्ग से भी महान होती है। सुनील आम्बेकर ने कहा कि दुनिया में कई देश, विचार ताकत, धर्म के आधार पर हमें बांटने की कोशिश करते रहे हैं। आक्रमणकारियों ने भी हमारे समाज में फूट डालने के लिए भाषा, जाति और संस्कृति पर चोट की, बावजूद इसके हमारी एकता बरकरार रही। इसमें हमारे त्योहारों का बड़ा योगदान रहा है। इसलिए हमें अपने पर्वों, त्योहारों और संस्कृति को मिटाने के प्रयास करने वालों को रोकना ही होगी.बोली, भाषा, जाति, धर्म, पहनावा भिन्न होने के बावजूद हम एक हैं और यही एकता एकात्मता का सूत्र है। भारत की संस्कृति ही जोड़ने की, एक सूत्र में पिरोने की संस्कृति है।

वैज्ञानिकों ने गॉड पार्टिकल के रूप में सिद्ध किया। भारतीय वैज्ञानिकों ने पहले ही कहा है कि जड़ और चेतन दोनों में परमात्मा है। जिसकी सत्ता होती है वह सत्य है। वाणी,चिंतन और कर्म के बल पर परमात्मा की अनुभूति करते हुए आप हर संकट से पार हो जाएंगे।

एक बार भाजपा, बार-बार भाजपा

केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह जी ने हिमाचल प्रदेश के नगरोटा, नकीखड्ड (जसवां प्रागपुर) और मैहतपुर (ऊना) में तीन विशाल जनसभाओं को संबोधित किया और हिमाचल प्रदेश की जनता से विकास के प्रति समर्पित माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में रिवाज बदलते हुए एक बार पुनः डबल इंजन वाली भाजपा सरकार बनाने का आह्वान किया।

श्री शाह ने कहा कि हिमाचल प्रदेश देवभूमि भी है और वीर भूमि भी। सेना में आबादी के हिसाब से सबसे अधिक नौजवान यहीं से जाते हैं। शौर्य, पराक्रम और देश की रक्षा के लिए मर मिटने का जज्बा यहाँ के युवाओं में हमेशा रहा है। इसलिए समग्र राष्ट्र इस महान धरा का ऋणी है। आपका एक–एक वोट हिमाचल प्रदेश को देश का नंबर वन राज्य बनाएगा। यह वर्ष जहाँ एक ओर देश की आजादी का अमृत महोत्सव वर्ष है तो वहीं हिमाचल प्रदेश का स्वर्ण जयंती वर्ष भी है। आज हिमाचल प्रदेश वासियों के लिए यह संकल्प लेने का समय है कि अगले 25 वर्षों में वे अपने प्रदेश को कहाँ देखना चाहते हैं जब देश अपनी आजादी के सौ वर्ष पूरे करेगा।

अगले पांच वर्षों में हम हिमाचल प्रदेश को भी ड्रग–फ्री स्टेट बनायेंगे और यहाँ से नशे के कारोबार को ख़त्म करेंगे।

कांग्रेस के पास कोई मुद्दा नहीं है। उनके पास कहने के लिए केवल एक चीज है कि यहाँ तो एक रिवाज है कि एक बार कांग्रेस आती है और दूसरी बार भाजपा आती है। मैं तो कहता हूँ कि कांग्रेस वालों को उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश, असम, गोवा और मणिपुर जाकर देखना चाहिए जहां रिवाज बदल गया है। एक बार भाजपा आती है तो बार–बार भाजपा ही आती है। इसलिए हिमाचल प्रदेश में भी रिवाज बदलने का समय आ गया है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भारतीय जनता पार्टी ने एक नया रिवाज शुरू किया है। हमारे राष्ट्रीय अध्यक्ष और हिमाचल प्रदेश के सपूत श्री जगत प्रकाश नड्डा जी के नेतृत्व में जितने भी चुनाव हुए हैं, लगभग उन सभी चुनावों में भाजपा ने दूसरी बार सरकार बनाया है। अब बारी हिमाचल प्रदेश की है। अब जनता ने निर्णय ले लिया है कि हिमाचल में भी एक बार भाजपा, बार–बार भाजपा।

संकल्पों को रेखांकित करते हुए श्री शाह ने कहा कि हिमाचल प्रदेश में फिर से भारतीय जनता पार्टी की सरकार बनते ही यूनिफ़ॉर्म सिविल कोड को लागू करने की प्रक्रिया शुरू कर दी जायेगी। सीमा पार से ड्रग्स और नशे के कारोबार के जरिए देश के नौजवानों को खोखला करने की जो साजिश रची जा रही है, उसे जड़–मूल से उखाड़ फेंकने के लिए आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी कटिबद्ध हैं। अगले पांच वर्षों में हम हिमाचल प्रदेश को भी ड्रग–फ्री स्टेट बनायेंगे और यहाँ से नशे के कारोबार को ख़त्म करेंगे। हिमाचल में पुनः बनने वाली भाजपा सरकार प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि के तहत किसानों को मिलने वाले 6,000 रुपये की सालाना आर्थिक सहायता राशि के अतिरिक्त मुख्यमंत्री अन्नदाता सम्मान निधि योजना के माध्यम से हिमाचल प्रदेश के छोटे किसानों को 3,000 रुपये की वार्षिक सहायता देगी। अगले पांच वर्षों में हम हिमाचल प्रदेश में 5 नए मेडिकल कॉलेज खोले जायेंगे। युवाओं में स्टार्ट–अप को बढ़ावा देने हेतु 900 करोड़ रुपये की निधि से एक अलग फंड बनाया जाएगा।

हिमाचल प्रदेश में वक्फ की अवैध संपत्तियों की जांच भाजपा सरकार कराएगी। सरकारी कर्मचारियों के वेतन की विसंगतियों को दूर किया जाएगा। भारतीय जनता पार्टी ने निर्णय लिया है कि प्रदेश में पुनः हमारी सरकार बनने पर छठी से बारहवीं तक पढ़ने वाली बेटियों को साइकिल दी जाएगी और बारहवीं से ऊपर पढ़ने वाली बेटियों को स्कूटी दी जायेगी। गर्भवती माताओं को पोषक आहार और उनके स्वास्थ्य खर्च के लिए 25,000 रुपये की आर्थिक सहायता दी जायेगी। भाजपा की सरकार बनने के बाद हर साल माताओं को पहली तीन सिलिंडर के लिए कोई भुगतान नहीं करना पड़ेगा।

श्री शाह ने कहा कि कांग्रेस के नेता आजकल चुनावी रैलियों में 10 गारंटी लेकर घूम रहे हैं। अरे भाई, गारंटी तो उसकी मानी जाती है जिसका काम करने का रिकॉर्ड हो और जिसकी कोई विश्वसनीयता हो। भला, कांग्रेस की गारंटी को कौन मानेगा? कांग्रेस का तो रिकॉर्ड ही करप्शन और स्कैम का रहा है। कांग्रेस की यूपीए सरकार के 10 वर्षों में लगभग 12 लाख करोड़ रुपये के घपले–घोटाले हुए। जब कांग्रेस के पास काम करने का समय था, तब तो उसने घपले–घोटाले किये और आज वही लोग गारंटी दे रहे हैं! इनकी गारंटी को हिमाचल में कोई मानता नहीं है। कांग्रेस के शासनकाल में इतने घोटाले हुए कि जिन्हें गिनना भी मुश्किल है जबकि हमारी सरकार में घोटाले ढूंढना मुश्किल है। यही दोनों पार्टियों के बीच में अंतर है। हमारी सरकार में विकास हर घर तक पहुँच रहा है। हमने अपने पिछले घोषणापत्र के लगभग 94% वादे पिछले 5 सालों में पूरे कर दिखाए हैं।

ये प्रधानमंत्री जी हैं जिन्होंने धारा 370 को ख़त्म किया, ट्रिपल तलाक को समाप्त किया, अयोध्या में प्रभु श्रीराम के भव्य मंदिर का शिलान्यास किया और आतंकवाद पर सर्जिकल और एयर स्ट्राइक किया।

हरी टोपी उस पार्टी की है, लाल टोपी इस पार्टी की है। ऊपरी हिमाचल उसका है, निचला हिमाचल इसका है। अरे भाई, क्यों इतनी मशक्कत कर रहे हो। मैं तो कह रहा हूँ कि लाल टोपी भी भाजपा की है और हरी टोपी भी भाजपा की है। ऊपरी हिमाचल भी भाजपा की है और निचला हिमाचल भी भाजपा का ही है। सभी जगह कमल खिलने वाला है। यह भाजपा है जिसने वर्षों से लंबित वन रैंक, वन पेंशन योजना को लागू किया जबकि कांग्रेस ने अपनी सरकार के 60 सालों में इस बारे में सोचा भी नहीं। आदरणीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी अब तक वन रैंक – वन पेंशन के लिए लगभग 41,000 करोड़ रुपये से अधिक की राशि दे चुके हैं।

केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री ने कहा कि हिमाचल प्रदेश की डबल इंजन वाली भाजपा सरकार ने डबल स्पीड से विकास के कार्य किये हैं। हर घर में गैस कनेक्शन पहुंचा है, हर घर में नल से जल का कनेक्शन पहुंचा है। आयुष्मान भारत और हिम केयर योजना से हिमाचल के लगभग सभी लोगों को मुफ्त स्वास्थ्य बीमा का कवच मिला है। कांग्रेस केवल चुनाव आने पर ही दिखाई देती है और अगले पांच सालों तक दूरबीन से खोजने पर भी दिखाई नहीं देती। ये प्रधानमंत्री जी हैं जिन्होंने अयोध्या में प्रभु श्रीराम के भव्य मंदिर के निर्माण का मार्ग प्रशस्त किया, काशी विश्वनाथ धाम का लोकार्पण किया, उज्जैन में महाकाल तीर्थ परिसर का पुनरुद्धार किया और केदारनाथ धाम एवं बद्रीनाथ धाम क्षेत्र का कायाकल्प किया। ये प्रधानमंत्री जी हैं जिनके मार्गदर्शन में गुजरात में माँ अंबा मंदिर बना, पावागढ़ में माँ काली का प्रसिद्ध मंदिर बना और सोमनाथ मंदिर कॉरिडोर का भी विकास हो रहा है।

नगरोटा में हुए विकास कार्यों को रेखांकित करते हुए श्री शाह ने कहा कि हमारी डबल इंजन वाली सरकार ने इस क्षेत्र में 365 करोड़ रुपये के पीडब्ल्यूडी के काम और 150 करोड़ रुपये की लागत से जलापूर्ति की परियोजानाओं के काम हुए हैं। आर्किटेक्चर कॉलेज के लिए 6 करोड़ रुपये दिए गए हैं। इस विधानसभा में एक सरकारी डिग्री कॉलेज भी खोला गया। लगभग 4.5 करोड़ रुपये की लागत से बागवा में संयुक्त कार्यालय भवन बनाया गया है। साथ ही 5.5 करोड़ रुपये की लागत से आईटीआई भवन का उद्घाटन भी हुआ है। लगभग 26 करोड़ रुपये की लागत से नगरोटा बगवा में बालिका छात्रावास और नगरोटा में फार्मेसी कॉलेज का शिलान्यास भी हुआ है। कांग्रेस से मैं पूछना चाहता हूँ कि आपने समय में क्या किया?

जसवां, प्रागपुर के विकास कार्यों को गिनाते हुए केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री ने कहा कि जसवां में आईटीआई कॉलेज और ऊना में फार्मेसी कॉलेज बना। कोटला में सरकारी डिग्री कॉलेज खोला गया। इस क्षेत्र में पशु चिकित्सालय भी खोला गया। इस एक क्षेत्र में दो एसडीएम बनाए गए। एक नया बीडीओ कार्यालय बनाया गया। जसवां प्रागपुर में 190 करोड़ रुपये की लगात से 139 परियोजनाओं का लोकपार्ण किया गया। परागपुर में पीएचसी का उन्नयन किया गया। लगभग 2 करोड़ रुपये की लगात से डीप जल इरिगेशन परियोजना पूरी की गयी। जल जीवन मिशन के तहत करोड़ों रुपये की लगत से हर घर में नल से जल पहुंचाया गया।

मैहतपुर (ऊना) में विकास कार्यों पर चर्चा करते हुए श्री शाह ने कहा कि यहाँ पीजीआई का सैटेलाईट सेंटर बनाया गया। एक लघु सचिवालय भवन भी बनाया गया।

संतोषगढ़ में 30 बेड्स का एक अस्पताल बनाया गया। ऊना में हमारी सरकार जिला कोषागार लेकर आई। ऊना में एक स्टेडियम बनाया गया। मंदिरों का सौंदर्यीकरन किया गया। डिग्री कॉलेज के नए भवन बनाए गए। केवल इस क्षेत्र के लिए ढाई करोड़ रुपये का रिवॉल्विंग फंड उपलब्ध कराया गया। सौभाग्य योजना के तहत यहाँ के लगभग 75,000 घरों में बिजली पहुंचाई गई। इस क्षेत्र के लगभग 82,000 किसानों के खाते में किसान सम्मान निधि पहुंचाई गई। ऊना में एक बल्क ड्रग पार्क भी बन रहा है जो यहाँ के आर्थिक विकास में मील का पत्थर साबित होगी।

केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री ने कहा कि धर्मशाला को स्मार्ट सिटी के रूप में विकसित किया जा रहा है। पठानकोट–मंडी सड़क को फोरलेन का बनाया गया है। चनौर, देहरा में औद्योगिक क्षेत्र विकसित किया। देहरा में सेंट्रल विद्यालय बनाया गया है। 300 करोड़ रुपये की लागत से एक पेयजल परियोजना बनाई गई। लगभग 1.38 लाख माताओं के घर में गैस का कनेक्शन और सिलिंडर पहुंचा है। प्रदेश में 20 लाख से अधिक लाभार्थियों को पिछले लगभग सवा दो साल से पीएम गरीब कल्याण अन्न योजना के तहत प्रति माह पांच किलो अनाज मुफ्त में मिल रहा है। बिलासपुर में लगभग 1500 करोड़ रुपये की लागत से एम्स का निर्माण हुआ। चंबा, नाहन और हमीरपुर में मेडिकल कॉलेजों का उन्नयन किया गया। लगभग 48 अस्पतालों मे आक्सीजन प्लांट्स लगाए गए। ऊना में बल्क ड्रग पार्क और नालागढ़ में मेडिकल डिवाइस पार्क बन रहा है। हिमाचल प्रदेश में ग्लोबल इन्वेस्टमेंट समिट के माध्यम से लगभग 41 हजार करोड़ रुपये का निवेश आया है।

सीमा पार से ड्रग्स और नशे के कारोबार के जरिए देश के नौजवानों को खोखला करने की जो साजिश रची जा रही है, उसे जड़-मूल से उखाड़ फेंकने के लिए प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी कटिबद्ध हैं। अगले पांच वर्षों में हम हिमाचल को भी ड्रग-फ्री स्टेट बनायेंगे और नशे के कारोबार को ख़त्म करेंगे।

श्री शाह ने कहा कि हिमाचल प्रदेश की माताओं के सम्मान के लिए प्रदेश की भाजपा सरकार ने पहली बार अपने बजट का 20 प्रतिशत हिस्सा नारी शक्ति के सशक्तिकरण के लिए आवंटित किया है। मुख्यमंत्री सगुन योजना के तहत हमारी डबल इंजन वाली सरकार ने 7,000 बेटियों की शादी करायी। 'बेटी है अनमोल' योजना के तहत लगभग 1.36 लाख लाभार्थियों को 41 करोड़ रुपये दिए गए। मुख्यमंत्री कन्यादान योजना के तहत लगभग 8500 बेटियों के लिए लगभग 39 करोड़ रुपये खर्च किए गए।

हमारे प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने धारा 370 को ख़त्म कर जम्मू–कश्मीर को सही मायने में भारत का अभिन्न अंग बनाया। पंडित जवाहरलाल नेहरू की गलती को कांग्रेस पार्टी ने फलने–फूलने दिया जिसका परिणाम यह हुआ कि जम्मू–कश्मीर विकास की मुख्यधारा से दूर होता चला गया। कांग्रेस, सपा, बसपा, एनसीपी, पीडीपी सबके सब संसद में धारा 370 को हटाने का विरोध कर रहे थे। धारा 370 हटने के बाद ये सभी जोर–शोर से कह रहे थे कि धारा 370 से हटाने से खून की नदियाँ बहेगी। लेकिन, खून की नदियाँ तो छोड़ो, किसी की कंकड़ चलाने की हिम्मत नहीं हुई। ये हमारे प्रधानमंत्री जी हैं जिन्होंने सर्जिकल स्ट्राइक और एयर स्ट्राइक कर आतंकवाद पर करारा प्रहार किया। ये हमारे प्रधानमंत्री जी हैं जिन्होंने रूस–यूक्रेन युद्ध के समय अपने नागरिकों की सकुशल वापसी कराई। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने दुनिया में भारत का सम्मान बढ़ाया है।

केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री ने कहा कि कोरोना के समय आदरणीय प्रधानमंत्री जी की प्रेरणा से देश में ही दो–दो कोविड रोधी वैक्सीन विकसित हुए और अब तक 219 करोड़ से अधिक वैक्सीन डोज एडमिनिस्टर किये जा चुके हैं। लगभग सवा दो साल से देश के लगभग 80 करोड़ लोगों को मुफ्त राशन उपलब्ध कराया जा रहा है। आज भारत मैन्युफेक्चरिंग हब के रूप में स्थापित हो रहा है। कांग्रेस की यूपीए सरकार के 10 वर्षों के शासन में हमारी अर्थव्यवस्था एक पायदान भी ऊपर नहीं चढ़ी जबकि मोदी सरकार के केवल 8 वर्षों में हमारी अर्थव्यवस्था 11वें स्थान से पांचवें स्थान पर पहुँच गई। भारत ने पिछले वित्त वर्ष में रिकॉर्ड निर्यात किया है। आज भारत दिन दूनी, रात चौगुनी प्रगति कर रहा है। पिछले 8 वर्षों में लगभग तीन करोड़ घरों में बिजली पहुंची है, 9 करोड़ घरों में गैस कनेक्शन पहुंचा है, लगभग 11 करोड़ शौचालय बने हैं और लगभग 55 करोड़ लोग आयुष्मान भारत से जोड़े गए हैं। कांग्रेस की चार–चार पीढ़ी ने शासन किया लेकिन लोगों को बुनियादी सुविधाएं भी सही से नसीब नहीं हुई। इसका जवाब कांग्रेस को देना चाहिए।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने आत्मनिर्भर भारत की नींव रखी है। वे जब नौसेना के जहाज का लोकापर्ण करते हैं तो नौसेना में ब्रिटिश क्रॉस को हटाकर वीर शिवाजी महाराज का चिह्न लगाते हैं। ये प्रधानमंत्री जी हैं जिन्होंने ट्रिपल तलाक को ख़त्म कर मुस्लिम महिलाओं को सम्मान के साथ जीने का अधिकार दिया। मुझे विश्वास है कि हिमाचल प्रदेश की जनता अपना आशीर्वाद और स्नेह इसी तरह भारतीय जनता पार्टी पर बनाए रखेगी और यहाँ एक बार फिर से भारतीय जनता पार्टी सरकार का गठन होगा।

''हमने यह गुजरात बनाया है''

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने चुनाव वाले गुजरात में एक नया उद्घोष किया कि 'हमने इसे गुजरात बनाया है' वलसाड में प्रधान मंत्री मोदी ने कहा, "हम गुजरात के विकास के लिए लगातार काम कर रहे हैं। हर गुजराती आत्मविश्वास से भरा है, इसलिए जब गुजराती बोलते हैं, तो उनके भीतर से एक आवाज निकलती है – हमने यह गुजरात बनाया है। "धर्मपुर अतीत के कई कार्यों के लिए जाना जाता है। यह मेरे लिए एक भाग्यशाली क्षण है कि मेरी पहली चुनावी सभा मेरे आदिवासी भाइयों और बहनों के आशीर्वाद से शुरू होती है। " प्रधानमंत्री मोदी ने राज्य में किए गए कार्यों की सराहना की और कहा कि गुजरात ने विकास के मामले में कई रिकॉर्ड बनाए। इसने समय–समय पर दंगों के दिनों को हटाकर राज्य को आगे बढ़ाया है। उन्होंने कहा, "न तो मुख्यमंत्री भूपेंद्र पटेल और न ही पीएम मोदी यह चुनाव लड़ रहे हैं। गुजरात के प्यारे भाइयों और बहनों यह चुनाव लड़ रहे हैं। पूरे गुजरात और समाज को कंधे से कंधा मिलाकर रहने और साथ रहने का अवसर मिला है।" रैली। उस समय को याद करते हुए जब राज्य के कई क्षेत्रों में डॉक्टरों, अस्पतालों और बुनियादी ढांचे की कमी थी, उन्होंने कहा कि यह हर गुजराती की कड़ी मेहनत के कारण है कि राज्य में आज सबसे अच्छी स्वास्थ्य सुविधाओं में से एक है। "हर गुजराती ने गुजरात को बनाने के लिए कड़ी मेहनत, खून और पसीना बहाया है। एक जमाने में हम डॉक्टरों की तलाश करते थे, आज आदिवासी इलाकों में अस्पताल और मेडिकल कॉलेज हैं। पहले अगर एक टैंक बनाया जाता था, तो ड्रम बजाया जाता था। एक महीने के लिए और हैंडपंप लग गया तो गांव पेंडा बांट देगा। आज एस्टोमल जैसी परियोजनाओं के कारण हम 200 मंजिल तक पानी उठाकर अपने आदिवासी गांवों में पानी पहुंचाने का काम कर रहे हैं।'

विधानसभा चुनाव की घोषणा के बाद प्रधानमंत्री का अपने गृह राज्य का यह पहला दौरा है। गुजरात में होने वाले विधानसभा चुनाव को लेकर बीजेपी ने कमर कस ली है। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने 13 अक्टूबर को अहमदाबाद में "गुजरात गौरव यात्रा" का उद्घाटन किया था। गुजरात विधानसभा का कार्यकाल 18 फरवरी, 2023 को समाप्त हो रहा है। गुजरात में दो चरणों में एक और पांच दिसंबर को चुनाव होंगे। मतों की गिनती 8 दिसंबर को होगी। गुजरात में बीजेपी ने लगातार छह विधानसभा चुनाव जीते हैं। इस चुनाव में भारतीय जनता पार्टी अपने संगठनात्मक, विकास के कार्यों के आधार पर जनता के बीच जा रही है। सभी सर्वे भाजपा की 125 से ऊपर सीटें बता रहे है। जिससे भाजपा की विजय सुनिश्चित है।

चन्द्रशेखर जी हमेशा मूल्यों की राजनीति किये : योगी

भारतीय राजनीति में अनूठे समाजवादी विचार के पुरोधा, बागी बलिया के सपूत चन्द्रशेखर जी राष्ट्रीय राजनीति के ध्रुवतारे थे। इन्दिरा गाँधी जी के आपातकाल के धुर विरोधी लोकतंत्र सेनानी, जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष चन्द्रशेखर जी नाना जी देशमुख, अटल जी के अभिन्न मित्र रहे। उनकी आदमकद प्रतिमा का अनावरण बलिया में योगी जी द्वारा हुआ।

पूर्व प्रधानमंत्री चंद्रशेखर को दलगत मानसिकता से हटकर सभी लोग अलग सम्मान देते थे। जनता से उनका सीधा जुड़ाव था। यही कारण था कि जनपद के लोग अपने घरेलू मसले को लेकर भी चंद्रशेखर के पास पहुंच जाया करते थे।

चंद्रशेखर की प्रतिमा का अनावरण

प्रतिमा अनावरण के साथ ही मुख्यमंत्री योगी आदित्यकनाथ ने जिले में 46 विकास की परियोजनाओं का लोकर्पण और शिलान्यास किया। इस दौरान उन्हों ने जिले के विकास की अपनी प्रतिबद्धताओं को दोहराते हुए बताया कि जिले के विकास के लिए सरकार हर कद म उठाएगी।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि बलिया को देश और दुनिया को पहचान दिलाने वाले चंद्रशेखर की प्रतिमा का अनावरण करने का मुझे अवसर मिला है। उन्होंने हमेशा मूल्यों की राजनीति की। उन्हें हर व्यक्ति की परख थी। कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक उनके प्रशसंक मिलेंगे। जब देश मे लोकतंत्र को रौंदने का प्रयास हुआ तो चंद्रशेखर जी मुखर हुए थे। स्वदेशी आंदोलन में वह लोकप्रिय हो गए थे। उनके खिलाफ कोई अभद्र टिप्पणी नहीं करता था।

उनकी प्रतिमा आजमगढ़ में बनायी गयी है। बहुत अच्छी प्रतिमा बनी है, इसमें कलाकार के हाथ की सफाई भी दिखाई पड़ेगी। चंद्रशेखर ने लोकतंत्र को मजबूती प्रदान करने में बड़ी भूमिका प्रदान की है। आज भारत वैश्विक मंच पर अपनी अलग पहचान बना रहा है। बलिया अभी तक बागी स्वभाव के लिए जाना जाता था, यह हजारों सालों पुरानी है। अब यहां की सब्जी दुनिया के बाजार में बिकने के लिए जाएगा। यहां के किसानों को सब्जी का अच्छा दाम मिलेगा। कई बार सब्जी खराब हो जाती है, अब वही सब्जी प्रोसेसिंग के जरिये पानी के जहाज के माध्यम से वैश्विक बाजार तक जाएगा।

यहां मल्टीमॉडल हब बनाया जा सकता है, क्योंकि यह जिला सरयू और गंगा के मध्य बसा है। कृषि उत्पादक संगठनों को बधाई देता हूं। आज पेयजल, स्वास्थ्य, सड़क और कृषि से जुड़ी परियोजनाओं का शिलान्यास और लोकर्पण हुआ है। यह जिला बिहार के बॉर्डर पर बसा है। यहां असीमित ऊर्जा है, किसानों की आमदनी बढ़ाई जा सकती है। इनलैंड वाटरवेज को विकसित किया जाएगा, क्योंकि यह बनारस–कोलकाता जलमार्ग का मुख्य केंद्र बन सकता है। निर्यात को बढ़ावा दिया जा सकता है। पर्यटन हमारे यहां बड़ा माध्यम है।

काशी विश्वनाथ में दर्शन के लिए एक करोड़ लोग आए थे, इससे हर तबके को रोजगार मिला है। भृगु कॉरिडोर का प्रस्ताव जिला प्रशासन बनाए। प्रोजेक्ट को जल्द धरातल पर उतारा जाए।

काशी की देव दीपावली

भव्य दिव्य हो रही काशी नगरी, तीनों लोक से न्यारी काशी की धरा पर देव दीपावली की शाम इंद्रधनुषी अनुपम छटा बिखरी। गंगा का अर्धचंद्राकार किनारा दैवीय आभा से दमक उठा। सुरसरि के घाटों पर ओर से छोर तक दीपों का तारामंडल से पूनम का चांद भी शरमा गया। गंगा घाटों पर दीपों का अद्भुत जगमग प्रकाश 'देवलोक' जैसे वातावरण की ही सृष्टि करता है। भव्य और दिव्य वाराणसी की देव दीपावली इस बार नव्य स्वरूप में देवताओं के साथ ही काशी वासियों के लिए भी अनोखी रही। इस बार काशी के घाट, कुंड और सरोवरों पर 21 लाख दीपों की रोशनी की आभा दीप मालिकाओं का स्वर्णिम संसार बसा।

पौराणिक मान्यता के अनुसार कार्तिक पूर्णिमा के कुछ दिन पहले देवउठनी एकादशी पर भगवान विष्णु 4 महीने की निद्रा के बाद जागते हैं। जिसकी खुशी में सभी देवता स्वर्ग से उतरकर बनारस के घाटों पर दीपों का उत्सव मनाते हैं। इसके अलावा मान्यता यह भी है कि भगवान शंकर ने कार्तिक पूर्णिमा के दिन त्रिपुर नाम के असुर का वध करके काशी को मुक्त कराया था। जिसके बाद देवताओं ने इसी कार्तिक पूर्णिमा के दिन अपने सेनापति कार्तिकेय के साथ भगवान शंकर की महाआरती की और इस पावन नगरी को दीप मालाओं से सजाया था।

बाबा का विशेष श्रृंगार

देव दीपावली को लेकर संतों विद्वानों की मान्यता के अनुसार एक तो यह कि काशी के प्रथम शासक दिवोदास ने अपने राज्य में देवी देवताओं का प्रवेश बंद कर दिया था। छिपे रूप में देवगण कार्तिक मास पंचगंगा घाट पर पवित्र गंगा में स्नान को आते रहे। बाद में देवताओं ने राजा को प्रभावित कर यह प्रतिबंध हटावा लिया। इस विजय को हर्षोल्लास से मनाने के लिए सभी देवी देवता बनारस में दीप मालाओं से सुसज्जित विजय दिवस मनाने और भगवान शिव की महाआरती के लिए कार्तिक पूर्णिमा के दिन पधारे थे। तभी से देव दीपावली मनाई जाने लगी।

वैसे तो देव दीपावली का उल्लेख निर्णय सिंधु और स्मृति कौस्तुभी में भी है। काशी में इसकी शुरुआत पुरातन काल से मानी जाती है। हालांकि देव दीपावली वर्ष 1986 में पूर्व काशी नरेश स्व डॉ. विभूति नारायण सिंह पंचगंगा पर हजारा दीप जलाकर कराई थी। काशी की संस्कृति में चार लक्खा मेले में रथयात्रा मेला, नाटी इमली का भरत मिलाप, चेतगंज की नक्कटैया और तुलसी घाट की नागनथैया के बाद अब कोटि मेले के रूप देव दीपावली को माना जाता रहा है।

मान्यता है कि जब पृथ्वी का निर्माण हुआ तो सूर्य की पहली किरण इसी पावन काशी नगरी की धरती पर पड़ी थी। परंपराओं और संस्कृतियों से रची–बसी काशी की देश दुनिया में पहचान बाबा विश्वनाथ, गंगा और उसके पावन घाटों से है। यहां के लोगों की सुबह हर–हर गंगे के साथ शुरू होती है तो शाम उसी मोक्षदायिनी गंगा के तट पर प्रतिदिन होने वाली आरती जय मां गंगे के साथ खत्म होती है। काशी के घाटों में मनाए जाने वाली इस देव दीपावली की लोकप्रियता देश–विदेश तक पहुंच चुकी है। आस्था से जुड़े इस दीपोत्सव ने आज इतना बड़ा रूप ले लिया है कि पर्यटन विभाग आज खुद इसको प्रचारित–प्रसारित करता है। इस अद्भुत नजारे को देखने और कैमरे में कैद करने के लिए लोग महीनों पहले से होटल और नावों की बुकिंग करवा लेते हैं।

श्रीकाशी विश्वधाम के लोकार्पण के बाद पहली देव दीपावली न सिर्फ कई तरह से खास रही बल्कि अब तक के भीड़ के सारे रिकॉर्ड भी टूटें। रंगीन लाइटों, फूलों, लेजर लाइट से सजे घाटों पर मानों स्वर्ग उतर आया हो वैसे तीनों त्रिलोक की राजधानी काशी मानी जाती है और देवों के स्वागत की यह दीपावली सबका साथ सबाक विकास का शुभ संकल्प लेकर आती है।

संविधान में कर्तव्य

योगी आदित्यनाथ

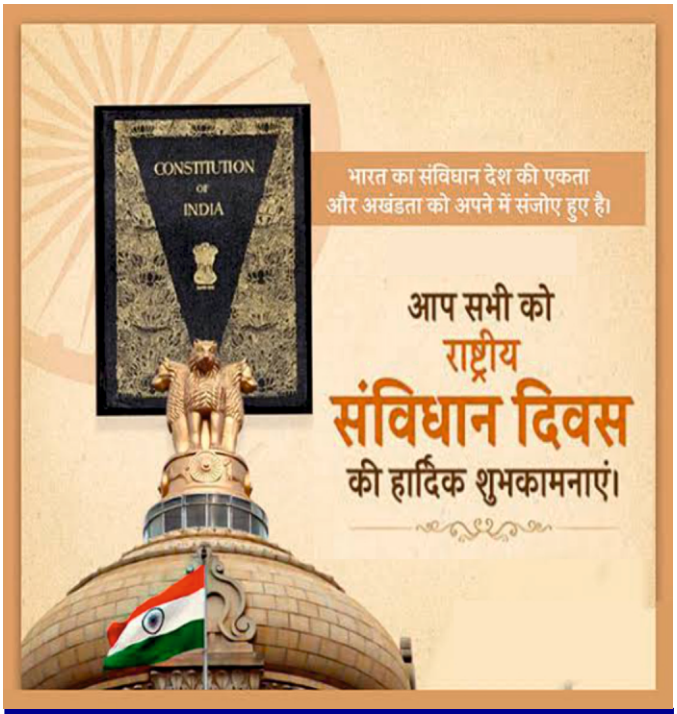

संविधान में हर नागरिक को दिए गए अधिकार तभी सुरक्षित हो सकते हैं, जब समाज अपने मूल कर्तव्यों के प्रति सचेत होकर उनका निर्वहन करे. सीएम ने संविधान दिवस के अवसर पर आयोजित एक समारोह में कहा कि, "हममें से हर व्यक्ति अधिकारों की बात तो करता है लेकिन कर्तव्यों से हम पीछे भागने का प्रयास करते हैं. भारत के संविधान ने हर नागरिक के लिए जहां मूलभूत अधिकार दिए हैं, तो वहीं कुछ बुनियादी कर्तव्य भी सुनिश्चित किए हैं और संविधान दिवस का मूल उद्देश्य भारत के उन संविधान प्रदत्त मूलभूत कर्तव्यों के प्रति हर नागरिक को जागरूक करना भी है."

समाज मूल कर्तव्यों का निर्वहन करे ''ये कर्तव्य हर हालात में किसी नागरिक के लिए उतने ही महत्वपूर्ण हैं, जितना कि हमारा व्यक्तिगत जीवन और पारिवारिक जीवन है. 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' हमें अपने मौलिक अधिकारों के प्रति सजग करता है. अधिकार तभी अनुरक्षित हो सकते हैं जब समाज अपने मूल कर्तव्यों के प्रति सचेत होकर उनका निर्वहन करे."

संविधान दिवस सबके लिए महत्वपूर्ण "संविधान दिवस हम सबके लिए बहुत महत्वपूर्ण है. हम सब जानते हैं कि 26 जनवरी 1950 को भारत का संविधान लागू हुआ था लेकिन इसे आज के दिन 1949 में संविधान सभा ने अंगीकृत किया था. हमारे संविधान की यही ताकत है कि दुनिया में सबसे बड़े लोकतंत्र के रूप में भारत एक आदर्श बना हुआ है."।

'एक भारत श्रेष्ठ भारत' की परिकल्पना को साकार किया ''हमारा संविधान सम–विषम परिस्थितियों में देश को एकजुट होकर ले चलने की प्रेरणा प्रदान करता है. हर विपरीत से विपरीत हालात में भी संविधान ने जाति, मत, संप्रदाय, भाषाओं और खानपान की बहुलता होने के बावजूद 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' की परिकल्पना को साकार किया, यह सबसे बड़ी विशेषता रही है.''।

"हम प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के आभारी हैं जिन्होंने स्वाधीनता के बाद घटी घटनाओं को वर्तमान पीढ़ी के जीवन में, उनकी याद में बनाए रखने के लिए संविधान को अंगीकृत किए जाने की वर्षगांठ को भी एक महत्वपूर्ण दिवस के रूप में देश के सामने पेश किया और 2015 से यह दिवस किसी न किसी रूप में हम सबके सामने आ रहा है."।

मौलिक कर्तव्य

1. संविधान के नियमों का पालन करें और उसके आदर्शों संस्थाओं राष्ट्रध्वज और राष्ट्रगान का पालन करें।
2. स्वतंत्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय आंदोलन को प्रेरित करने और उच्च आदर्शों को हृदय में संजोए रखे और पालन करें।
3. भारत की प्रभुता एकता और अखंडता की रक्षा करें और उसे अक्षुण्ण बनाए रखें।
4. देश की रक्षा करें और आह्वान किए जाने पर राष्ट्र की सेवा करें।
5. भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भातृत्व की भावना का निर्माण करें जो धर्म, भाषा, प्रदेश या वर्ग पर आधारित सभी भेदभाव से परे हो. ऐसी प्रथाओं का त्याग करें जो स्त्रियों के सम्मान के विरोध में हो।
6. हमारे समाजिक संस्कृति की गौरवशाली परंपरा का महत्व समझे और उसका परिरक्षण करें।
7. प्राकृतिक पर्यावरण की जिसके अंतर्गत वन, झील नदी और वन्य जीव हैं रक्षा करें और उसका संवर्धन करें तथा प्राणीमात्र के प्रति दया भाव रखें।
8. वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानवतावाद और ज्ञान अर्जन तथा सुधार की भावना का विकास करें।
9. सार्वजनिक संपत्ति को सुरक्षित रखें और हिंसा से दूर रहें।
10. व्यक्तिगत एवं सामूहिक गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में उत्कर्ष की ओर बढ़ने का सतत प्रयास करें।
11. माता–पिता या संरक्षक द्वारा 6 से 14 वर्ष के बच्चों लिए प्राथमिक शिक्षा उपलब्ध करवाना। (यह मौलिक कर्तव्य 86 सविधान संशोधन अधिनियम 2000 द्वारा जोड़ा गया.)

स्वतंत्रता आन्दोलन में जनजातीय नायक

गुलामी के कालखण्ड में देश भर में जनजातीय समाज ने निरन्तर संघर्ष किया चाहे वनवासी विद्रोह हो या भील विद्रोह जनजाति समाज ने पराधीनता को कभी स्वीकार नहीं किया। देश स्वाधीनता के अमृतकाल से गुजर रहा है, शासकीय एवं निजी स्तर पर देश भर में कई कार्यक्रम किए जा रहे हैं, लेकिन यह वर्ष कुछ अलग है। इस वर्ष में कुछ ऐसी गतिविधियां हो रहीं हैं जिसे स्वाधीनता के प्रथम वर्ष से ही होना चाहिए था।

स्वाधीनता के महान संग्राम में जितना योगदान गांधी, नेहरू और जाने माने सेनानियों का था उतना ही, या कुछ मामलों में तो हम कह सकते हैं कि उनसे अधिक योगदान जनजाति क्रांति और वनवासी क्रांतिकारियों का रहा है।

चाहे वो संथाल क्रांति हो या भूमकाल आंदोलन, चाहे वो बिरसा मुंडा का नेतृत्व हो या वीर नारायण सिंह का बलिदान, इन सभी क्रांतिकारी घटनाओं और गतिविधियों को इतिहास के उन पन्नों में दबाकर रख दिया गया था, जिसे पिछले 75 वर्षों में पहली बार खोला गया है।

यदि हम देश में स्वाधीनता के लिए हुई पहली संगठित क्रांति की बात करें तो यह वर्ष 1857 मां हुई थी, जिसका नेतृत्व विभिन्न क्षेत्रों में अलग–अलग क्रांतिकारियों ने किया था। लेकिन स्वतंत्रता के इस पहले समर से भी पूर्व एवं इसके बाद देशभर में जनजातियों ने भी अपने प्रभावी क्षेत्रों में क्रांति की मशालें जलाई।

झारखंड से लेकर, छत्तीसगढ़, बंगाल, बिहार, ओडिशा, आंध्र और तेलंगाना समेत गुजरात और राजस्थान में भी वनवासी समूहों ने मां भारती की स्वतंत्रता के लिए इस्लामिक आक्रमणकारियों और ब्रिटिश ईसाइयों के विरुद्ध संघर्ष किया।

वनवासी समाज द्वारा किए गए इन क्रांतियों में एक खास बात यह भी देखी गई कि ये सभी संघर्ष केवल स्वतंत्रता तक या किसी नेतृत्व तक ही सीमित नहीं रहे, इन क्रांतियों में समाज के सभी वर्गों की हिस्सेदारी थी और भूमि की स्वाधीनता के साथ–साथ धर्म और अपनी परंपरा के सम्मान लिए भी संघर्ष देखा गया।

जनजातियों का आक्रमणकारियों के विरुद्ध संघर्ष यूं तो तब से ही है जब इस्लामिक आक्रमणकारियों ने भारत में कदम रखे थे, लेकिन 14वीं शताब्दी में रोहतासगढ़ में की गई क्रांतिकारी गतिविधियों को कभी भुलाया नहीं जा सकता।

दरअसल रोहतासगढ़ की राजकुमारी सिनगी देई और वहां के सेनापति की पुत्री कइली देई ने अपने अद्भुत युद्ध कौशल एवं बुद्धिमत्ता से इस्लामिक आक्रमणकारियों को नाको चने चबवा दिए थे। और उन्होंने ऐसा एक या दो बार नहीं बल्कि तीन–तीन बार आक्रमणकारियों को धूल चटाया था।

इसके अलावा गोंडवाना साम्राज्य की रानी दुर्गावती ने भी इस्लामिक आक्रमणकारियों को ऐसी मात दी जिसे सदियों तक याद रखा जाएगा। अपनी मातृभूमि की स्वतंत्रता, संप्रभुता एवं अपने धर्म की अस्मिता को बचाने के लिए वीरांगना रानी दुर्गावती ने अनेकों बार मुगल सेना को पराजित किया।

रानी दुर्गावती के नेतृत्व में किया गया युद्ध हो या रोहतासगढ़ की संगर्ष गाथा, इनमें सर्व समाज ने बढ़–चढ़कर हिस्सा लिया, खास तौर पर जनजाति महिलाओं ने खुद को इस लड़ाई के अग्रिम पंक्ति में रखा और मातृभूमि की रक्षा के लिए अपने प्राणों को न्यौछावर कर दिया।

1857 के स्वातंत्र्य समर से 80 वर्ष पूर्व ही बिहार के वनवासी क्षेत्रों में तिलका मांझी ने ब्रिटिश ईसाइयों के विरुद्ध संघर्ष की शुरुआत कर दी थी। कुछ इतिहासकार आधुनिक भारत में स्वाधीनता संघर्ष के बीच प्रथम स्वतंत्रता सेनानी के रूप में तिलका मांझी का नाम भी लेते हैं।

मूल नाम 'जबरा पहाड़िया' से 'तिलका मांझी' तक का सफर

डॉ संजय गोंड

उन्होंने ब्रिटिश ईसाई सत्ता के विरुद्ध क्रांति, जनजातियों को जागरूक कर एवं मातृभूमि की स्वतंत्रता के लिए संघर्ष कर हासिल किया था।

गरीब वनवासियों की भूमि और उनके धर्म को नुकसान पहुंचाते ब्रिटिश ईसाइयों के विरुद्ध उन्होंने समाज को एकजुट किया और फिर पराधीनता के विरुद्ध उन्होंने जंग छेड़ दी। 1770 में जब भीषण अकाल पड़ा तब उन्होंने ब्रिटिश ईसाइयों के लूट कर राशन और अन्य सामानों को आम जनता के बीच बांट दिया।

1771 से लेकर 1784 तक तिलका मांझी ने कुछ ऐसा किया जिससे ब्रिटिश हुकूमत ही घबराने लगी, इस बीच तिलका ने ना समर्पण किया और ना ही कभी पीछे हटे। अंततः ब्रिटिश ईसाई सत्ता ने फूट डालो की नीति अपनाते हुए तिलका मांझी को भी पकड़ लिया और उन्हें फांसी दे दी।

ब्रिटिश ईसाइयों को लगा था कि तिलका मांझी की मौत के बाद जनजाति समाज डरकर चुप बैठ जाएगा, लेकिन तिलका के बलिदान ने पीढ़ियों तक क्रांति का बीज बोया और जनजाति समाज लगातार संघर्ष करता रहा।

वहीं 1855 में संथाल क्रांति एक ऐसा विद्रोह था जिसने ब्रिटिश ईसाई सत्ता की नींव हिला दी थी। संथाल क्रांति, जिसे हूल क्रांति के नाम से भी जाना जाता है, का नेतृत्व सिध्दो, कान्हो, चांद और भैरव नामक 4 भाइयों ने किया था। इस क्रांति में इनकी दो बहनें फूलो और झानो भी महत्वपूर्ण रूप से शामिल हुईं थीं।

एक छोटे से क्षेत्र में शुरू हुआ यह विद्रोह विशाल क्रांति के रूप में व्यापक क्षेत्र में फैल गया था। इस क्रांति का क्षेत्र वर्तमान झारखंड और बंगाल के पुरुलिया एवं बांकुरा क्षेत्र में था। ब्रिटिश ईसाइयों के विरुद्ध हुए इस क्रांति में 20 हजार से अधिक वनवासियों ने हिस्सा लिया था।

वहीं क्रांतिकारियों ने इस दौरान अंग्रेज ईसाइयों के विरुद्ध छापामार युद्ध की रणनीति अपनाई थी, जिसके तहत ब्रिटिश सैनिकों के शिविरों को निशाना बनाया जाता था। इस क्रांति के दौरान सैकड़ों जनजाति ग्रामीणों ने अपने प्राणों की आहुति दे दी थी, लेकिन उन्होंने पराधीनता को कभी स्वीकार नहीं किया।

1828 से लेकर 1832 के बीच वर्तमान झारखंड क्षेत्र में वनवासी समाज ने ब्रिटिश ईसाइयों के विरुद्ध एक और बड़ी क्रांति को अंजाम दिया था, जिसे लरका आंदोलन के नाम से जाना जाता है। इस आंदोलन में सैकड़ों वनवासी परिवार शामिल हुए थे, जिनका नेतृत्व प्रमुख रूप से 7 लोगों ने अलग अलग स्तर पर किया था।

बुद्धू भगत, हलधर, गिरधर, उनकी बहन रुनिया और झुनिया समेत कई ऐसे क्रांतिकारी इस संघर्ष में शामिल थे जिन्होंने अंग्रेजी हुकूमत की जड़ें हिला दी थी। इन क्रांतिकारियों को पकड़ने के लिए अंग्रेज ईसाइयों की सेना ने दिन–रात एक कार दिया था, लेकिन 2 वर्षों तक वो पूरी तरह नाकाम रहे।

लरका क्रांति के दौरान क्रांतिकारियों ने अंग्रेज ईसाइयों की सेना के कई हथियार एवं गोला बारूद डिपो को ध्वस्त कर दिया था और कई ब्रिटिश अधिकारियों को मौत के घाट उतार दिया था, इस कारण ब्रिटिश ईसाई सत्ता के बीच इनका भय व्याप्त हो चुका था।

लरका आंदोलन में शामिल नेतृत्वकर्ताओं को पकड़ने के लिए अंग्रेज ईसाइयों ने पहले तो तरह तरह के अभियान चलाए, वहीं इसके बाद उन्होंने इन क्रांतिकारियों पर इनाम भी घोषित किए। इनाम के लालच में आंदोलन से जुड़े ही एक व्यक्ति ने अंग्रेजों को क्रांतिकारियों की जानकारी दी और इसके बाद एक साथ नेतृत्वकर्ताओं को अंग्रेजी सेना ने पकड़ लिया था। इसके बाद इन स्वाधीनता सेनानियों ने मां भारती को स्वतंत्र कराने के लिए अपने प्राणों की आहुति दे दी, लेकिन ब्रिटिश सत्ता के सामने नतमस्तक नहीं हुए।

आज भी आत्म निर्भर भारत बनाने में जनजातीय समाज जल, जमीन, जंगल, जानवर के सहारे नया भारत गढ़ने में लगा है।

राष्ट्र-ऋषि दत्तोपंत ठेंगड़ी

जन्म – 10 नवम्बर 1920

श्री दत्तोपंतठेंगड़ी (दत्तात्रेय बापुराव) का जन्म 10 नवम्बर, 1920 को दीपावली के दिन महाराष्ट्र के वर्धा जिला के आर्वी नामक ग्राम में हुआ। उनके पिता बापूराव दाजीबा ठेंगड़ी अधिवक्ता थे तथा माता श्रीमती जानकी देवी भगवान दतात्रेय की परम भक्त थीं। परिवार में एक छोटा भाई नारायण ठेंगड़ी और एक छोटी बहन अनुसूया थी। दिनांक 14 अक्टूबर (अमावस्या), 2004 को पुणे में श्रद्धेय दत्तोपंत ठेंगड़ी जी का महानिर्वाण हुआ।

श्रीठेंगड़ी की प्रारंभिक शिक्षा आर्वी स्थित म्यूनिसिपल स्कूल में हुई। उन्होंने 1936 में नागपुर के मौरिस कॉलेज से स्नातक व इसके बाद लॉ कॉलेज से एलएलबी की उपाधि प्राप्त की। इसी दौरान 'हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन' से जुड़े रहे।

भाषा ज्ञान –हिन्दी, बंगाली, संस्कृत, मलयालम, अंग्रेजी, मराठी।

विदेश यात्राः मिश्र, केन्यान, उगांडा, तंजानिया, मॉरिशस, दक्षिण अफ्रीका, सोवियत यूनियन, फ्रांस, स्वीरट्जरलैण्ड्, बेल्जियम, हंगरी, इटली, जर्मनी, लेक्जांबर्ग, यूगोस्लाफविया, इंग्लैण्डर, हॉकलैण्ड ,डेनमार्क, कॅनाडा, संयुक्त् राज्य अमरीका, मैक्सिको, चीन, इंडोनेशिया, बांग्लोदेश, बर्मा (म्यां मार), मलेशिया, नेपाल, थाईलैण्डम, सिंगापुर, इजराइल, फिजी, त्रिणिडाड, वेस्टं इण्डी्ज।

कृतिः उन्होंने 200 से अधिक छोटी–बड़ी पुस्तकें लिखी, सैकड़ों प्रतिवेदन प्रकाशित किये तथा हजारों की संख्या में आलेख पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित है।

पुस्तकेंः एकात्मन मानव दर्शन, कम्युलनिज्मओ अपनी ही कसौटी पर, प्रचार तंत्र, पश्चिमीकरण के बिना आधुनिकीकरण, राष्ट्री य पुनर्निर्माण का आधार, ध्येपय पथ पर किसान, लक्ष्य एवं कार्य, अपनी राष्ट्री यता, शिक्षा में भारतीयता परिचय, भारतीय किसान, प्रस्ताचवना, लोक–तंत्र, श्रमिक क्षेत्र के उपेक्षित पहलू, परम वैभव का संघ मार्ग, चिरन्तधन राष्ट्रय–जीवन, राष्ट्रीय पुरुष छत्रपति शिवाजी, विचार सूत्र, पुरानी नींव नया निर्माण, कम्यूटराईजेशन, हमारी विशेषताएँ, हमारे डॉ. बाबा साहब अम्बे डकर, एक प्रेरक व्यक्तित्वत, जागृत किसान, हमारा अधिष्ठोन, एकात्मे के पुजारी डॉ. बाबा साहब अम्बे्डकर, डॉ. अम्बे डकर और सामाजिक क्रान्ति की यात्रा, राष्ट्र –चिन्तीन, राष्ट्री य श्रम दिवस, हिन्दू मार्ग(थर्ड वे का अनुवाद), कार्यकर्ता, राष्ट्री यकरण या सरकारीकरण, पूर्व सूत्र (कृतज्ञ–कृतज्ञता)।

परस्पेगक्टिव, हिज लिगेसी अवर मिशन, मॉडर्नायजेशन विदऊटवेस्टगर्नायजेशन, कन्झपयूमर विदऊट सावरेंटी, थर्ड वे, फोकस ऑन सोशल इकॉनॉमिक प्रॉबलम्सय, दि ग्रेट सेंटीनल, कम्यूटराईजेशन, व्हाई भारतीय मजदूर संघ, स्पेबक्ट्रस।

चिंतन पाथेय, वक्तृंची पूर्वतयारी, ऐरणीवरचे घाव।

श्री ठेंगड़ी दिसम्बर,1934 के वर्धा जिले के शीत शिविर में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संपर्क में आये। एलएलबी की शिक्षा के पश्चात संघ के प्रचारक के नाते केरल में संघ का विस्तार करने के लिए 22 मार्च, 1942 को 'कालीकट' पहुंचे। यहाँ उन्होंने मलयालम सीखा। 1944 से 1947 तक बंगाल (आसाम) सहित प्रांत प्रचारक रहे और केन्द्र कोलकता।

संघ पर प्रतिबंध व आपातकालः महात्मा गांधी के हत्या के दौरान 1948 में संघ पर प्रतिबंध लगने के बाद श्री ठेंगड़ी भूमिगत कार्य करते रहे, हालांकि कुछ समय बाद ही उन्हें नागपुर बुला लिया गया। वहीं आपातकाल के दौर में भी वह भूमिगत कार्य करते रहे।

अभाविप के संस्थापक सदस्य के रूप में : 09 जुलाई, 1949 को परिषद् की स्थापना की औपचारिक घोषणा के बाद श्री ठेंगड़ी को बंगाल से वापस बुलाया गया और परिषद् के संस्थापक सदस्य के नाते नागपुर विदर्भ के प्रदेशाध्यक्ष के रूप में जिम्मेदारी सौंपी गयी।

मजदूर क्षेत्र में श्री ठेंगड़ी का प्रवेश व श्री गुरूजी के विचारः भोपाल में अभाविप कार्य के दौरान श्री ठेंगड़ी से कांग्रेस की 'इंटक' के तत्कालीन प्रादेशिक अध्यक्ष पी वाई देशपांडे ने इंटक के साथ जुड़कर कार्य करने के लिये कहते हुए कहा कि 'कम्युनिस्टों से सबसे बड़ा खतरा देश के मजदूर क्षेत्र पर है। वे मास्को के पिट्ठू हैं।' मजदूर क्षेत्र में उनका प्रभाव रोकना आवश्यक है। तुम इंटक में आ जाओ।

श्री गुरूजी से यह बात बताते हुए ठेंगड़ी जी ने कहा कि वहां कैसे काम करूँगा, मुझे पसंद नहीं है, इंटक के सभी नेता गांधी हत्यारे कहते हुए निंदा करते हैं। जिसके बाद श्री गुरूजी ने कहा कि यह निमंत्रण स्वर्ण अवसर है। मैं भी चाहता हूँ कि अपने पास ऐसे कार्यकर्ता रहें, जो मजदूर क्षेत्र में काम करने की पद्धति को जानते हों। निमंत्रण स्वीकार करो और अभाविप के साथ ही इंटक का भी काम करो।

श्री ठेंगड़ी ने 1950 से 1955 तक इंटक मे विभिन्न दायित्वों का निर्वहन किया। उन्हें इंटक से संबंधित 10 संगठनों का अधिकारी बनाया गया और बाद में 1950 में राष्ट्रीय परिषद् का सदस्य भी बनाया। कम्युनिस्टों से प्रभावित ऑल इंडिया बैंक इम्पलाईज एसोसिएशन का प्रांतीय संगठन मंत्री रहकर 1952 से 1955 तक कार्य किया।

भारतीय मजदूर संघ की स्थापना

कांग्रेस की इंटक व वामपंथी यूनियनों में पाश्चात्य सोच के कारण मजदूर क्षेत्र की दयनीय स्थिति देखते हुए श्री ठेंगड़ी ने अनुभव किया कि पश्चिम से आया श्रमिक क्षेत्र का चिन्तन भारत के लिए अनुकूल नहीं है। इस पर गहन चिन्तन करते हुए तुलनात्मक अध्ययन के परिणामस्वरूपउन्होंने निर्णय किया कि भारतीय चिंतन के आधार पर एक संगठन होना चाहिए, जिसके बाद 'औद्योगिक परिवार' की संकल्पना साकार करने हेतु भोपाल में 23 जुलाई, 1955 को लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक की जयन्ती के अवसर पर भारतीय मजदूर संघ की स्थापना हुई। स्थापना के समय उपस्थित लोगों में पंजाब, दिल्ली, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, बंगाल, उत्तर प्रदेश के 35 प्रतिनिधि मौजूद थे।

जनजातीय समुदायों का कल्याण हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता: नरेन्द्र मोदी

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 19–20 अक्टूबर, 2022 को गुजरात का दौरा किया और करीब 15,670 करोड़ रुपये की परियोजनाओं का लोकार्पण और शिलान्यास किया। 19 अक्टूबर को प्रधानमंत्री ने गांधीनगर के महात्मा मंदिर सम्मेलन और प्रदर्शनी केंद्र में डिफेंसएक्सपो22 का उद्घाटन किया। इसके बाद उन्होंने अडालज में मिशन स्कूल ऑफ एक्सीलेंस का शुभारंभ तथा जूनागढ़ में विभिन्न विकास परियोजनाओं का शिलान्यास किया। इसके अलावा श्री मोदी ने इंडिया अर्बन हाउसिंग कॉन्क्लेव 2022 का उद्घाटन कर राजकोट में कई प्रमुख परियोजनाओं का लोकार्पण एवं शिलान्यास किया। 20 अक्टूबर को प्रधानमंत्री ने केवड़िया में मिशन लाइफ का शुभारंभ किया। इसके बाद उन्होंने व्यारा में विभिन्न विकास पहलों का शिलान्यास किया

व्यारा, तापी

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 20 अक्टूबर को व्यारा, तापी में 1970 करोड़ रुपये से अधिक की विभिन्न विकास पहलों की आधारशिला रखी। इन परियोजनाओं में सापुतारा से 'स्टैच्यू ऑफ यूनिटी' तक सड़क के सुधार के साथ–साथ छूटे हुए संपर्क सड़कों का निर्माण तथा तापी और नर्मदा जिलों में 300 करोड़ रुपये से अधिक की जलापूर्ति परियोजनाएं शामिल हैं।

श्री मोदी ने कहा कि देश ने जनजातीय हितों और जनजातीय समुदायों के कल्याण को लेकर दो तरह की राजनीति देखी है। एक तरफ ऐसी पार्टियां हैं, जो जनजातीय हितों की परवाह नहीं करती हैं और लम्बे समय से जनजातीय समुदायों से झूठे वादे करती रही हैं। वहीं, दूसरी तरफ भाजपा जैसी पार्टी है, जिसने हमेशा जनजातीय कल्याण को सर्वोच्च प्राथमिकता दी है। उन्होंने कहा कि जनजातीय समुदायों का कल्याण हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता है और हमने जहां भी सरकार बनाई है, हमने जनजातीय कल्याण को सर्वोच्च प्राथमिकता दी है।

श्री मोदी ने जनजातीय क्षेत्रों में कृषि को नया जीवन देने के लिए शुरू की गई वाडी योजना को रेखांकित किया। उन्होंने पहले की स्थिति को याद किया, जब जनजातीय क्षेत्रों में बाजरा–मक्का उगाना और खरीदना मुश्किल था। श्री मोदी ने कहा कि आज जनजातीय क्षेत्रों में आम, अमरूद और नींबू जैसे फलों के साथ काजू की खेती की जाती है। उन्होंने इस सकारात्मक बदलाव का श्रेय वाडी योजना को दिया और बताया कि इस योजना के माध्यम से जनजातीय किसानों को बंजर भूमि पर फल, सागौन और बांस की खेती में सहायता प्रदान की गई।

राजकोट

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने गुजरात के राजकोट में 19 अक्टूबर को लगभग 5860 करोड़ रुपए की समर्पित परियोजनाओं की आधारशिला रखी और इन्हें राष्ट्र को समर्पित किया। श्री मोदी ने भारत शहरी आवास सम्मेलन 2022 का भी उद्घाटन किया। प्रधानमंत्री ने लाइट हाउस परियोजना के तहत निर्मित 1100 से अधिक घरों को समर्पित किया। श्री मोदी द्वारा समर्पित की जा रही अन्य परियोजनाओं में एक जल आपूर्ति परियोजना सहित ब्राह्मणी–2 बांध से नर्मदा नहर पंपिंग स्टेशन तक मोरबी–बलक पाइपलाइन परियोजना, एक क्षेत्रीय विज्ञान केंद्र, फ्लाईओवर पुल और सड़क संपर्क से संबंधित अन्य परियोजनाएं शामिल हैं।

मुख्य बातें

- जनजातीय समुदायों का कल्याण हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता है और हमने जहां भी सरकार बनाई है, हमने जनजातीय कल्याण को सर्वोच्च प्राथमिकता दी है।
- जनजातीय बच्चों को आगे बढ़ने के नए अवसर मिले हैं।
- जनजातीय कल्याण बजट पिछले 7-8 वर्षों में तीन गुने से अधिक हो गया है।
- 'सबका प्रयास' से हम एक विकसित गुजरात और एक विकसित भारत का निर्माण करेंगे।
- वाडी योजना के माध्यम से जनजातीय किसानों को बंजर भूमि पर फल, सागौन और बांस की खेती में सहायता प्रदान की गई।

प्रधानमंत्री ने गुजरात में राष्ट्रीय राजमार्ग 27 के राजकोट–गोंडल–जेतपुर खंड के मौजूदा फोर–लेन को छह लेन बनाने की आधारशिला रखी। उन्होंने मोरबी, राजकोट, बोटाद, जामनगर और कच्छ में विभिन्न स्थानों पर लगभग 2950 करोड़ रुपये के जीआईडीसी औद्योगिक एस्टेट की भी आधारशिला रखी। जिन अन्य परियोजनाओं की आधारशिला रखी जा रही है उनमें गढ़का में अमूल–फेड डेयरी प्लांट, राजकोट में एक इनडोर स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स का निर्माण, दो जल आपूर्ति परियोजनाएं और सड़क एवं रेलवे क्षेत्र की अन्य परियोजनाएं शामिल हैं।

श्री मोदी ने कहा कि देश के 6 स्थानों में से राजकोट लाइट हाउस परियोजना के लिए एक स्थान है और नवीनतम तकनीक से निर्मित 1144 घरों को आज समर्पित किया गया। राजकोट के सैकड़ों गरीब परिवारों को दीवाली से पहले आधुनिक तकनीक से बने बेहतरीन घरों को सुपुर्द करने की प्रसन्नता ही कुछ और है। प्रधानमंत्री ने कहा कि वह विशेष रूप से उन बहनों को बधाई देंगे, जो इन घरों की मालिक बनीं और उन्होंने कामना की कि इस दीवाली पर लक्ष्मी उनके इस नए घर में निवास करें।

मुख्य बातें

- किसान क्रेडिट कार्ड ने खासकर हमारे पशुपालन श्रमिकों और मछुआरा समुदाय के लिए जीवन को बहुत आसान बना दिया है।
- सरकार ने न केवल बंदरगाहों के लिए पहल की है, बल्कि बंदरगाह आधारित विकास को क्रियान्वित कर रही है।
- बढ़ता बुनियादी ढांचा पर्यटन को बड़े पैमाने पर बढ़ावा दे रहा है।

मुख्य बातें

- लाइट हाउस परियोजना के अंतर्गत 1100 से अधिक निर्मित घरों को समर्पित किया।
- इंडिया अर्बन हाउसिंग कॉन्क्लेव 2022 का उद्घाटन किया।
- हम विकसित भारत के लिए विकसित गुजरात के मंत्र के साथ आगे बढ़ रहे हैं।
- बुनियादी सुविधाओं और गरिमापूर्ण जीवन के बिना गरीबी से बाहर निकलना असंभव है।
- पिछले दो दशकों में राजकोट से इंजीनियरिंग से जुड़ी वस्तुओं का निर्यात 5 हजार करोड़ रुपये से अधिक हो गया है।
- दुनिया के 13 प्रतिशत से अधिक सिरेमिक अकेले मोरबी में उत्पादित होते हैं।

जूनागढ़

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 19 अक्टूबर को गुजरात के जूनागढ़ में लगभग 3580 करोड़ रुपये की विभिन्न विकास परियोजनाओं का शिलान्यास किया। जूनागढ़ में इन परियोजनाओं में तटीय राजमार्गों में सुधार के साथ–साथ मिसिंग लिंक का निर्माण, दो जलापूर्ति परियोजनाएं और कृषि उत्पादों के भंडारण के लिए एक गोदाम परिसर का निर्माण शामिल है। श्री मोदी ने श्री कृष्ण रुक्मणी मंदिर, माधवपुर के समग्र विकास और सीवेज और जल आपूर्ति परियोजनाओं और पोरबंदर फिशरी हार्बर में रखरखाव की परियोजना का भी शिलान्यास किया। गिर सोमनाथ में प्रधानमंत्री ने दो परियोजनाओं की आधारशिला रखी, जिसमें माधवाड़ में एक मछली पकड़ने के बंदरगाह का विकास शामिल है।

सभा को संबोधित करते हुए श्री मोदी ने हल्के–फुल्के अंदाज में कहा कि दिवाली और धनतेरस के त्यौहार समय से पहले आ गए हैं और जूनागढ़ के लोगों के लिए नए साल के जश्न की तैयारी पहले से ही चल रही है। श्री मोदी ने उन परियोजनाओं का लोकार्पण और शिलान्यास करने पर प्रसन्नता व्यक्त की, जो पहले के समय में राज्य के बजट से अधिक लागत की थीं। उन्होंने कहा कि यह सब गुजरात के लोगों के आशीर्वाद की वजह से संभव हुआ है।

श्री मोदी ने जूनागढ़, गिर सोमनाथ और पोरबंदर वाले क्षेत्र को गुजरात की पर्यटन राजधानी बताया। उन्होंने कहा कि आज जिन परियोजनाओं की योजना बनाई जा रही है, उनसे रोजगार और स्वरोजगार के अपार अवसर पैदा होंगे।

श्री मोदी ने कहा कि मां नर्मदा दूर का तीर्थ है, लोगों की मेहनत से मां नर्मदा सौराष्ट्र के गांवों में अपना आशीर्वाद देने पहुंची हैं। उन्होंने पूर्ण समर्पण के साथ प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने के लिए जूनागढ़ के किसानों की सराहना की। श्री मोदी ने इस बात पर प्रकाश डाला कि गुजरात में उगाए जाने वाले केसर आम का स्वाद दुनिया के हर हिस्से में पहुंच रहा है।

उन्होंने कहा कि कच्छ का रण जो मुसीबतों से घिरा था, अब गुजरात के विकास की ओर अग्रसर है। श्री मोदी ने कहा कि 25 साल पहले उन्होंने गुजरात के विकास के लिए जो संकल्प लिया था, वह अब साकार हो गया है।

75 जिलों में 75 डिजिटल बैंकिंग इकाइयां राष्ट्र को समर्पित

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 16 अक्टूबर को वीडियो कॉन्फ्रेंस के माध्यम से देश के 75 जिलों में 75 डिजिटल बैंकिंग इकाइयां (डीबीयू) राष्ट्र को समर्पित कीं। दरअसल, 2022–23 के केंद्रीय बजट भाषण के हिस्से के रूप में वित्त मंत्री श्रीमती निर्मला सीतारमण ने हमारे देश की आजादी के 75 साल पूरे होने के उपलक्ष्य में 75 जिलों में 75 डिजिटल बैंकिंग इकाइयों (डीबीयू) स्थापित करने की घोषणा की थी। डीबीयू की स्थापना का उद्देश्य डिजिटल बैंकिंग का लाभ देश के कोने–कोने तक पहुंचाना है, जो सभी राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों को कवर करेगा। 11 सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक, 12 निजी क्षेत्र के बैंक और एक लघु वित्त बैंक इस पहल में भाग ले रहे हैं।

डीबीयू ऐसे आधारभूत आउटलेट होंगे, जो लोगों को विभिन्न प्रकार की डिजिटल बैंकिंग सुविधाएं प्रदान करेंगे, जैसेकि बचत खाता खोलना, बैलेंस–चेक, प्रिंट पासबुक, फंड ट्रांसफर, फिक्स्ड डिपॉजिट में निवेश, ऋण आवेदन, स्टॉप–पेमेंट निर्देश, जारी किए गए चेक, क्रेडिट/डेबिट कार्ड के लिए आवेदन करना, खाते का विवरण देखना, करों का भुगतान करना, बिलों का भुगतान करना, नामांकन करना आदि।

डीबीयू ग्राहकों को पूरे वर्ष बैंकिंग उत्पादों और सेवाओं तक किफायती, सुविधाजनक पहुंच व बेहतर डिजिटल अनुभव प्रदान करने में सक्षम बनाएगा। वे डिजिटल वित्तीय साक्षरता का प्रसार करेंगे और साइबर सुरक्षा जागरूकता के साथ–साथ सुरक्षा संबंधी उपायों पर ग्राहक शिक्षा पर विशेष जोर दिया जाएगा।

इस अवसर पर प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने कहा कि 75 डिजिटल बैंकिंग इकाइयां (डीबीयू) वित्तीय समावेशन को आगे बढ़ाएंगी और नागरिकों को बेहतर बैंकिंग सेवा का अनुभव भी कराएंगी। उन्होंने कहा कि ये एक ऐसी विशेष बैंकिंग व्यवस्था है जो न्यूनतम डिजिटल इंफ्रास्ट्रक्चर से अधिकतम सेवाएं देने का काम करेगी। ये सेवाएं कागजी लिखा–पढ़ी और झंझटों से मुक्त होंगी और पहले से कहीं ज्यादा आसान होंगी।

श्री मोदी ने कहा कि हमने दो चीजों पर एक साथ काम किया। पहलाकृ बैंकिंग व्यवस्था को सुधारना उसे मजबूत करना, उसमें पारदर्शिता लाना और दूसराकृ वित्तीय समावेश करना। उन्होंने कहा कि हमने बैंकिंग सेवाओं को दूर–सुदूर में घर–घर तक पहुंचाने को सर्वोच्च प्राथमिकता दी।

प्रधानमंत्री ने कहा कि आज भारत के 99 प्रतिशत से अधिक गांवों में 5 किमी के दायरे में कोई न कोई बैंक शाखा, बैंकिंग आउटलेट या 'बैंकिंग मित्र' है। उन्होंने कहा कि आज भारत में प्रति एक लाख वयस्क नागरिकों पर जितनी बैंक शाखाएं मौजूद हैं, वह जर्मनी, चीन और दक्षिण अफ्रीका जैसे देशों से अधिक है।

राष्ट्रीयता कभी मानवता विरोधी नही होती

अपने सुख, हित और उन्नति के लिए व्यक्ति को न केवल अपने शरीर का, बल्कि मन, बुद्धि और आत्मा का भी विचार करना होगा, क्योंकि इन चारों का समुच्चय ही व्यक्ति है।

इसी के साथ हमने यह भी विचार किया था कि व्यक्ति केवल अकेली इकाई नहीं, वह एक सामाजिक प्राणी है। समाज के लिए उसका घनिष्ठ संबंध है। मनुष्य की बौद्धिक, धार्मिक, भौतिक, मानसिक, आध्यात्मिक मान्यताएं, मूल्य, आदर्श–सब समाज से मिलते हैं। इसलिए समाज को भुलाकर उसका विकास नहीं हो सकता।

परंतु यह एक विवाद है, और प्रश्न बना है कि व्यक्ति तथा समाज में कौन बड़ा है और दोनों में क्या संबंध है? कुछ लोग व्यक्ति को प्रमुखता देते हैं। दूसरे लोग कहते हैं कि समाज बड़ा है। समाज को अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति व्यक्ति द्वारा करवानी चाहिए। व्यक्ति की सभी गतिविधियां समाज की आवश्यकता के अनुरूप हों। यह विवाद बेमाने है। वास्तव में व्यक्ति और समाज का जीवमान संबंध है।

समाज क्या है?

मोटे रूप में समाज समूहवाचक संज्ञा की ध्वनि है। समाज वर्ग का द्योतक होता है। कुरसी एक वस्तु है और फर्नीचर समूहवाचक है। इसी प्रकार विद्यार्थी तथा क्लास का संबंध है। समाज भी व्यक्तियों के समूह को कहा जाएगा।

दूसरा प्रश्न होता है, समाज में कितने लोगों का कैसा समूह होना चाहिए? क्या व्यक्तियों के मिलने से ही समाज बन जाता है? क्या रोटरी क्लब, अंतरराष्ट्रीय क्लब, रजिस्टर्ड सोसाइटी समाज कहलाएंगे? क्या सिनेमा, रेलगाड़ी, मैच देखनेवाले दर्शक, बाज़ार की भीड़ समूह होने के कारण ही समाज कहे जाएंगे? क्या चार डाकुओं का गिरोह, जिसमें प्रेम–अनुशासन दोनों ही आते हैं, अपने वर्ग के लिए उत्सर्ग की भावना भी उनमें होती है, समाज कहलाएगा? वास्तव में यह समाज नहीं कहलाएगा।

समाज ऐसे मानवों का समूह है, जो बनता नहीं पैदा होता है। समाज बनावटी तरीक़ों से नहीं बनाया जा सकता। जिस प्रकार ज्वॉइंट स्टॉक कंपनी, रजिस्टर्ड सोसाइटी या अन्य सामाजिक, धार्मिक संस्थाएं बनती हैं, वैसे समाज नहीं बनाया जा सकता। हिंदू–अंग्रेज़ जर्मन सभी बैठकर, विधान बनाकर, निर्णय लेकर समाज का रूप नहीं दिया गया। ये सभी समाज तो आप ही पैदा हुए हैं।

समाज चैतन्यमान इकाई है, जीवमान इकाई है। इसे 'आर्गेनिक यूनिट' भी कहते हैं। घोड़ा तथा पेड़ जोड़–तोड़कर नहीं बनाए जा सकते। मोटर अलग–अलग पुर्जो को मिलाकर बनाई जाती है। पेड़ के लिए सबसे पहले अंकुर होता है, बाद में पौधा, तना, शाखा और फल–फूल इसी प्रकार समाज पैदा होता है। वह जीवमान इकाई है। आप 1 कंपनी, क्लब, चोरों डाकुओं का गिरोह बना सकते हैं, पर हिंदू–अंग्रेज जर्मन जापानी समाज को किसी ने बनाया है, ऐसा नहीं कह सकते।

अपने हाथ से भोजन करता हूं, उसका मेरे शरीर पर परिणाम होता है। परंतु मैंने या किसी ने इस शरीर को बनाया, यह कहना ग़लत है। हमारा शरीर जीवमान है हमारी प्रत्येक क्रिया का हमारे शरीर पर असर होता है, लेकिन शरीर पैदा होता है, बनाया नहीं जाता।

समाज की मर्यादा होती है। मानवों का समाज इकाई नहीं है। जिले के लोग, पार्टी के लोग इकाई नहीं होते। इकाई तो हम प्राचीन काल की जातियों को कह सकते हैं। ये आजकल की जातियां– ब्राह्मण, ठाकुर, बनिए से भिन्न होती हैं। प्राचीन जाति समाज का पर्याय रूप मानी जाती थी। हिंदू एक जाति है, इसे भगवान् ने किसी उद्देश्य से हो बनाया है। सृष्टि की प्रत्येक वस्तु किसी–न–किसी उद्देश्य से बनी है। कोई वस्तु निरर्थक नहीं है। आजकल कल–कारखानों में 'रेशनलाइजेशन', यानी बेकारों की छंटनी होती है। भगवान् भी सृष्टि की प्रत्येक वस्तु का 'रेशनलाइजेशन' करता रहता है।

बालक अपने बक्से में अनेक वस्तुएं इकट्ठी करता है। उपयोगी और अनुपयोगी की कल्पना उसे नहीं होती। बड़ा होने पर उसमें चयन करने की योग्यता आती है और वह काम की चीज रखता अन्य फेंक देता है। इसे हम 'लॉ ऑफ नेचुरल सेलेक्शन' कहते हैं। ऐसे ही जातीय जीवन में भी होता है। जिस जाति की आवश्यकता नहीं होती है, वह जीवित रहती ही नहीं तो नष्ट हो जाती है। बेबीलोनिया, सीरिया, मिस्र आदि जातियां इसी प्रकार नष्ट हो गईं। जिसका काम बाक़ी है, वह जिंदा रहती है। जिसका काम समाप्त हो जाता है, वह मर जाता है।

भगवान् राम का नाम लेने से जो श्रद्धा और भक्ति के भाव पैदा

होते हैं, वे केवल एसोसिएशन के कारण नहीं, वरन् एक इकाई होने के कारण होते हैं। पांव में कांटा लगते ही दिमाग को पता लग जाता है, क्योंकि हमारा संपूर्ण जीवन एक इकाई है, एक प्राण है। प्राण, जीवात्मा और आत्मा के अर्थ में अंतर है। लेकिन मोटे रूप में आत्मा, प्राण, जीव एक अर्थ में प्रयोग किए जाते हैं। जब तक शरीर में प्राण या जीव या आत्मा विद्यमान है, तब तक इसका अंग–प्रत्यंग सक्रिय रहता है। उसके समाप्त होने के बाद शरीर में कोई ताकत नहीं रहती।

समाज की भी ऐसी ही आत्मा होती है। उसे हम चिति कहते हैं। चिति का अर्थ चैतन्य होता है। एक जीवात्मा और दूसरी जीवात्मा में अंतर होता है। समाज में भी जिनकी एक चिति है। वह एक समाज है, जिनकी चिति अलग–अलग होती है वह समाज भी अलग–अलग होते हैं।

एक आत्मा या चितिवाला समाज जब एक भूमि पर रहता है तथा समाज और भूमि में माता–पुत्र का संबंध होता है। इसे हम राष्ट्र कहते हैं। राष्ट्र केवल करोड़ों लोगों का समूह मात्र नहीं। राष्ट्र तो पैदा होते हैं। राष्ट्र बनाए नहीं जाते।

हमारे देश में राष्ट्रीय एकता परिषद् बनी और विचार किया जाने लगा कि हमें अपने राष्ट्र को बनाना है। यह बात गलत है। राष्ट्र तो बना हुआ है, इसका विकास, उन्नति करने पर विचार किया जा सकता है। बहुत तर्क हुआ और लोग किसी नतीजे पर नहीं पहुंच सके। इतने में चीन का आक्रमण हुआ सारे देश में एकता की भावना प्रकट हुई। हिमालय हमारा है। इसकी रक्षा हमें करनी है यह नारा सारे देश में बुलंद हुआ। द्रविड़ स्थान की मांग करनेवाले लोग भी कहने लगे, हिमालय का अपमान नहीं होने देंगे। सारे देश में राष्ट्रीयता का ज्वार आया। फिर उसी परिषद् की फिर बैठक हुई तो लोगों ने कहा कि चीन के हमले ने सिद्ध कर दिया है कि हम एक राष्ट्र हैं और वह राष्ट्रीय एकता परिषद् भंग कर दी गई। अतः राष्ट्र बनाया नहीं जाता, वह तो स्वतः पैदा होता है।

राष्ट्र के साथ हमारा संबंध मातृवत् है। क्योंकि व्यक्ति और समाज का संबंध अन्योन्याश्रित होता है। इसी के लिए जीवन देना त्याग कहलाता है। बंदा वैरागी का जीवन देना, शहीद होना माना गया है। वहीं कई लोग कुतुब मीनार से कूदकर मरते हैं, उसे आत्महत्या कहा जाता है। एक राष्ट्र की आत्मा की रक्षा करने के लिए शहीद होता है और दूसरी आत्महत्या है। राष्ट्र की आत्मा का जीवन तथा जीवन पद्धति के साथ संबंध होता है। मां बच्चे को खिलाने में आनंद का अनुभव करती है। उसी प्रकार हमारा राष्ट्र के साथ संबंध है। इसके लिए सब कुछ करने में हमें आनंद होता है।

पागल मनुष्य कपड़े फेंक देता है तथा संन्यासी भी वस्त्र त्यागकर नंगा रहता है। पहले व्यक्ति को पागलखाने भेज दिया जाता है और दूसरे व्यक्ति के पांव छुए जाते हैं। पहले का समाज के साथ कोई संबंध नहीं रहता, दूसरा समाज सेवा का व्रत लिये होता है। राष्ट्र मानव जीवन की एक स्वाभाविक इकाई है। कई राष्ट्र मिलकर मानव जीवन बनता है।

आजकल नाप–तौल से ग्राम तथा मीटर की पद्धति चलती है। यह नाप–तौल की इकाई कहलाती है। इसी प्रकार राष्ट्र भी एक इकाई है। इसके छोटे टुकड़े जाति, धर्म हैं और वृहद भाग अनेक राष्ट्र हैं। राष्ट्र एक मौलिक इकाई होने से समाप्त नहीं किया जा सकता। वह प्राकृतिक रूप से समाप्त हो जाए तो बात दूसरी है। राष्ट्र को तोड़ने के प्रयास कइयों ने किए। इस्लाम ने कहा, संसार के मुसलमान एक हैं, पोप ने भी संसार में ईसाई धर्म के प्रचार की चेष्टा की, कम्युनिस्टों ने भी 'दुनिया के मजदूरों एक हो' का नारा लगाया और राष्ट्र–भावना समाप्त करने की चेष्टा की, लेकिन जब जर्मनी ने रूस पर आक्रमण किया, तब उसी रूस ने 'फादरलैंड' का नारा लगाया, तब युद्ध में विजय मिली। आज चीन और रूस का विरोध राष्ट्रवाद का विरोध है। दुनिया में राष्ट्रवाद की सत्ता ही प्रभावी रही है। दुनिया के सभी तत्त्वज्ञानों का उपयोग सब राष्ट्र अपने–अपने मतलब के लिए कर रहे हैं। वास्तव में असली जोड़नेवाला तत्त्व राष्ट्र है। भिन्न–भिन्न राष्ट्र मिलकर मानव के सुख के लिए प्रयास कर सकते हैं। मैजिनी ने एक लेख में लिखा कि संगीत में सब वाद्य इकट्ठे हो जाते हैं। जैसे तबला, वीणा, मजीरा आदि। बैंड में भी बिगुल, ढोल, ड्रम आदि मिलकर एक साथ स्वर से स्वर मिलाकर बजते हैं। तभी ठीक लगता है। इसी प्रकार राष्ट्रीयता में भी एकरूपता लाई जाती है।

एक आत्मा या चितिवाला समाज जब एक भूमि पर रहता है तथा समाज और भूमि में माता-पुत्र का संबंध होता है। इसे हम राष्ट्र कहते हैं। राष्ट्र केवल करोड़ों लोगों का समूह मात्र नहीं। राष्ट्र तो पैदा होते हैं। राष्ट्र बनाए नहीं जाते

राष्ट्रों में एकरूपता के कारण मानव हित संपादित होता है। राष्ट्रीयता कभी मानवता विरोधी नहीं होती। जिस प्रकार जीभ दांतों के बीच रहती है, फिर भी दांतों द्वारा कटती नहीं, यदि ग़लती से कट भी जाती है तो दांत नहीं तोड़े जाते। इसी प्रकार चलते–चलते पैर नहीं टकराते, यदि कभी टकरा भी गए तो पांव को नहीं काटा जाता। राष्ट्र भी कभी–कभी गलती से आपस में टकरा जाते हैं और संघर्ष कर बैठते हैं, यह विकार के कारण है। यह स्वाभाविक अवस्था नहीं है। इस कारण राष्ट्र को ही समाप्त नहीं किया जा सकता। **क्रमशः**

–संघ शिक्षा वर्ग, बौद्धिक वर्गः 27 मई, 1967

कल्पना
माइक सर्विस गोला 9918139270

पत्रिका पंजीकरण – RNI-51899/91 डाक पंजीकरण – SSP/LW/NP-117-2021-23
नवम्बन प्रथम अंक 2022 – प्रेषित डाकघर – R.M.S. चारबाग, लखनऊ – प्रेषण तिथि : 11–13 (प्रथम पाक्षिक)

देव दीपावली काशी

भारतीय जनता पार्टी के लिए मुद्रक तथा प्रकाशक प्रो. श्यामनन्दन सिंह द्वारा नूतन ऑफसेट मुद्रण केन्द्र, संस्कृति भवन, राजेन्द्र नगर, लखनऊ से मुद्रित व भाजपा कार्यालय, 7, विधानसभा मार्ग, लखनऊ से प्रकाशित। सम्पादक : अरूण कान्त त्रिपाठी